पुस्तिका सीरीज़—42

# हमारा सबसे बड़ा दुश्मन

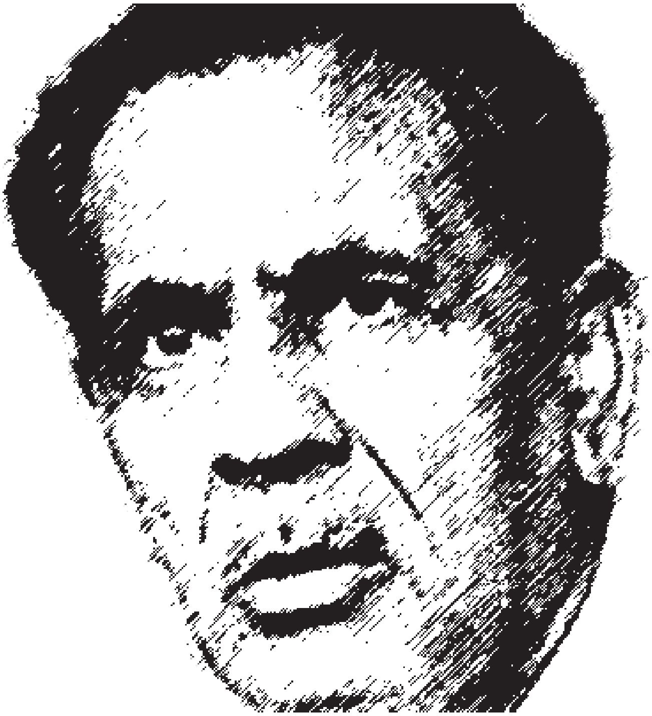

**'फ़िराक़' गोरखपुरी**

सेकुलर विचारों से भरा 'फ़िराक़' गोरखपुरी का एक गुमनाम व नायाब लेख

तलाश व पेशकश :

**अली अहमद फ़ातमी**

हमारा सबसे बड़ा दुश्मन

*प्रकाशक :*
***isd इंस्टीट्यूट फॉर सोशल डेमोक्रेसी***
फ्लैट नम्बर-110, नम्बरदार हाउस,
62-ए, लक्ष्मी मार्केट, मुनिरका
नई दिल्ली-110067
टेलीफोन 011-26196356, टेलीफैक्स 011-26177904
ईमेल : notowar@rediffmail.com
वेबसाइट : isd.net.in

*प्रकाशन वर्ष :* 2011

केवल सीमित वितरण के लिए

पुस्तिका सीरीज़—42

# हमारा सबसे बड़ा दुश्मन

**'फ़िराक़' गोरखपुरी**

सेकुलर विचारों से भरा 'फ़िराक़' गोरखपुरी का एक गुमनाम व नायाब लेख

तलाश व पेशकश :

**अली अहमद फ़ातमी**

# कुछ इस लेख के बारे में

जिन लोगों ने 'फ़िराक़' गोरखपुरी की शायरी और शख़्सियत दोनों को करीब से देखा और समझा है उनको अन्दाज़ा होगा कि 'फ़िराक़' साहब जितने बड़े शायर थे उतने ही बड़े चिन्तक और बातचीत करने वाले (CONVERSATIONLIST) उनके अन्दर का फ़नकार और बुद्धिजीवी, दोनों मिलकर जब अपनी अस्ल सूरत में आते तो ज्ञान और रचना की ऐसी-ऐसी फुलझड़ियाँ छुटतीं कि सुनने वाला उसकी जगमगाहट में डूब कर रह जाता। उनकी शायरी के विषय तो बहरहाल सीमित थे पर उनकी बातचीत के विषय असीमित। उनकी बातचीत अकसर शुरू होती शायरी से पर वह कल्चर तहज़ीब, सियासत, खेलकूद, सब्जी तरकारी तक होते हुए चुटकुले पर खत्म होती।

'फ़िराक़' साहब का जितना सरमाया शायरी का है लगभग उतना ही गद्य का भी लेकिन फ़िराक़ साहब ने जिस सलीक़े से अपनी शायरी को पेश किया, गद्य को पेश न कर सके, शायद इसलिए कि वह अपने आप को बुनियादी तौर पर शायर पहले समझते थे और यह सच भी है, फिर भी उनके गद्य की जो किताबें हमें मिलती हैं वह बहुत अहम हैं, इसके अतिरिक्त न जाने कितने लेख और हैं जो समय-समय पर भिन्न-भिन्न विषयों पर लिखे, छपे और पत्रिकाओं व अख़बारों की भीड़ में गुम हो गये जिन्हें आज तलाश किया जाये तो बड़े काम के हो सकते हैं। तो सच यह कि फ़िराक़ साहब उर्दू के बाज़ दूसरे रूमानी शायरों की तरह निरे शायर ही न थे बल्कि एक सुलझे हुए बुद्धिजीवी व चिन्तक भी थे जिनके चिंतन के दायरे में भारत की मिली-जुली तहज़ीब हिन्दू धर्म, इसलामी हुकूमतों का मिज़ाज, जातीय व भाषायी समस्यायें, तहज़ीब की रंगारंगी, 1947 ई. का हादसा, आज़ादी की जंग, बंटवारा, फ़सादात, जेल से लेकर चकनी की मशक्कत तक सब कुछ आ जाते। मेरे इस दावे की पुष्टि करेगा फ़िराक़ साहब का यह लम्बा लेख जिसका शीर्षक है "हमारा सबसे बड़ा दुश्मन" यह लेख उर्दू के एक किताब्चे की शकल में मुझे आगरे की एक लाइब्रेरी से मिला। 48 पृष्ठों का यह किताब्चा अज़ीज़ी प्रेस आगरे से छपा, प्रकाशक के तौर पर संगम पब्लिशिंग हाउस का नाम दिया हुआ है। संगम पब्लिशिंग हाउस के बारे में कहा जाता है कि फ़िराक़ साहब को एक बार छापाखाने के कारोबार का

शौक़ हुआ, रुपया 'फ़िराक़' साहब की कमज़ोरी थी वह रुपया कमाने की ख़ातिर अकसर तिजारत के बारे में संजीदगी से सोचा करते, कभी लान्डरी की दुकान खोलते तो कभी परचून की दुकान, लेकिन जल्द ही यह दुकानें तजुर्बे की कमी और फ़िराक़ साहब के फ़नकारना मिज़ाज के कारण दम तोड़ देतीं। इसी प्रकार शायद 48 ई. के इर्द-गिर्द पब्लिशिंग हाउस के बारे में सूझी चूंकि इस कारोबार में उनका शौक और मिज़ाज मेल खाता था और खुद उन्हीं की किताबें धड़ाधड़ छप कर आने लगीं इसलिए यह कारोबार कुछ दिन तक चलता रहा। इसी संगम पब्लिशिंग हाउस से यह किताब्चा भी छपा शायद 1950 के इर्द-गिर्द (किताब पर सन् नहीं लिखा है) क्योंकि कुछ वर्षो बाद यह पब्लिशिंग हाउस भी बंद हो गया, बहरहाल जब यह किताब्चा छपा होगा तो इसकी कुछ संख्या भी रही होगी, इधर उधर वितरित भी हुआ होगा, फिर पता नहीं क्यों और कैसे फ़िराक़ साहब का यह अद्‌भुत और अनमोल किताब्चा फ़िराक़ के शोधकर्ताओं और फ़िराक़ के माहिरों की आँखों से ओझल रहा।

'फ़िराक़' साहब ने अपनी होश व हवास भरी ज़िन्दगी की शुरुआत शायरी और सियासत दोनों से की। बीसवीं शताब्दी की दूसरी, तीसरी और चौथी दहाई में भारत सियासी और समाजी ऐतबार से किस तरह हिचकोले खा रहा था और किस अन्दाज़ से एकजुट होकर आज़ादी की लड़ाई लड़ रहा था इसका अन्दाज़ा खूब लगाया जा चुका है। इस लड़ाई में हर तरह के लोग थे। कवि लेखक बुद्धिजीवी आदि सभी शामिल थे। 'फ़िराक़' साहब का जोशीला ज़ेहन कैसे खामोश रह सकता था वह भी इस जंग में न केवल शामिल हुए बल्कि जेल भी गये, दूसरी मुसीबतें भी झेलीं और अपने हिसाब से योगदान दिया। आज़ादी से पहले और विशेषकर आज़ादी के बाद जिस प्रकार साम्प्रदायिकता का वातावरण बना और दंगे हुए उसने पूरे देश को और विशेषकर फ़नकारों और बुद्धिजीवियों को प्रभावित किया। फ़िराक़ साहब ग़ज़ल के शायर थे और एक संवेदनशील कलाकार। वह हिन्दू धर्म पर गहरी नज़र रखते थे लेकिन बाहर हिन्दू न थे, इसी प्रकार कई के बड़े शायर होने और उर्दू तहज़ीब के परस्तार होने के कारण किसी भी प्रकार इनको उर्दू विरोधी या मुस्लिम विरोधी नहीं कहा जा सकता। वह एक सच्चे हिन्दुस्तानी थे और मोहब्बत के शायर, इसलिए साम्प्रदायिकता आदि से उनका नफ़रत करना स्वाभाविक था। एक फ़नकार की हैसियत से वह एक इंसान को एक मोहब्बत भरे इन्सान और हिन्दुस्तान को एक सजे संवरे आज़ाद हिन्दुस्तान की शक्ल में देखना चाहते थे। मुद्दतों और मुश्किलों के बाद आज़ादी मिली थी उसको वह किसी प्रकार बर्बाद शक्ल में नहीं देख सकते थे, लेकिन अफसोस कि आज़ादी और बंटवारे के बाद जिस प्रकार साम्प्रदायिकता

फैलती गई, दंगे होते गये उससे भारत की, भारतीय संस्कृति को जो नुक़सान पहुंचने लगा उसका अंदाज़ा फ़िराक़ साहब को खूब था। वह हिन्दुओं से कहना चाहते थे कि असल दुश्मन मुसलमान नहीं है और इसी प्रकार मुसलमानों के बीच से हिन्दुओं के विरुद्ध ज़हर को कम करना चाहते थे। वह कहना चाहते थे कि मज़हबी तंगनज़री और धार्मिक उन्माद ही हमारा सबसे बड़ा दुश्मन है इसीलिए इस किताब का नाम रखा -''हमारा सबसे बड़ा दुश्मन''-

आज़ादी से लेकर आज तक साम्प्रदायिकता के विरोध में और क़ौमी एकता की हिमायत में इतना लिखा जा चुका है कि अब सब कुछ पुराना और पिटा-पिटाया सा लगता है लेकिन ग़ौर कीजिये पाँचवी दहाई के इर्द-गिर्द फ़िराक़ जैसे शायर के क़लम से इस तरह का बेबाक लेख का लिखा जाना कोई मामूली बात न थी।

इस लेख की दो खूबियाँ बहुत साफ नज़र आयेंगी। पहली भारत की समन्वित संस्कृति पर फ़िराक़ की गहरी नज़र, तहज़ीबों का आदान-प्रदान, सात रंगों का एक रंग, अनेकता में एकता आदि पर फ़िराक़ की पकड़ बहुत मजबूत थी। भागीरथी तहज़ीब के मुकाबले इस मिली-जुली तहज़ीब को ही भारत की असल तहज़ीब समझते थे और खुद उसके बहुत बड़े प्रतीक थे। दूसरी खूबी इस लेख की इसकी भाषा है जिसे शुद्ध हिन्दुस्तानी कहा जा सकता है जिसमें उर्दू के साथ-साथ बोलचाल के हिन्दी शब्द भी खूब प्रयोग किये गये हैं जो फ़िराक़ साहब के हिन्दी भाषा के ज्ञान का सबूत पेश करते हैं ऐसी भाषा फ़िराक़ ने कम ही प्रयोग की है। फ़िराक़ साहब के बारे में आम हिन्दी दोस्तों का यह ख्याल रहा है कि वह जितने उर्दू के दोस्त थे हिन्दी के उतने ही दुश्मन जबकि ऐसा न था, उन्होंने बार-बार अपने भाषणों में यह बात कही थी कि वह हिन्दी के विरोधी नहीं हैं बल्कि मुश्किल और बोझल हिन्दी शब्दावली को नापसन्द करते हैं कुछ कट्टरपंथी हिन्दी साहित्यकार जान-बूझ कर उसे संस्कृति की ओर ले जाने की कोशिश में ऐसा करते हैं जो असल हिन्दी के साथ ज़ुल्म है। यह लेख इस बात की गवाही देगा कि उन्होंने अपनी भाषा में कैसे सुन्दर और सरल हिन्दी के शब्द प्रयोग किये और यही उनकी शायरी का भी हिस्सा है।

फ़िराक़ साहब उन खुशनसीब या बदनसीब शायरों में से थे जिन्हें हमेशा उर्दू का एक अच्छा और बड़ा शायर तो माना गया साथ ही उन्हें शायर की पंक्ति से हटा कर अकसर हिन्दू समझा जाता रहा। 'नियाज़' फतेहपुरी ने अपने एक लेख के शीर्षक ''उर्दू का हिन्दी शायर'' के द्वारा इस सोच की पुष्टि कर दी। कट्टर मुस्लिम

शायरों के बीच वह हमेशा तिरछी निगाहों से देखे गये और यह ख़्याल आम रहा कि फ़िराक़ अगर हिन्दू न होते तो वह इतने बड़े शायर न थे कि इतनी शोहरत और इज़्ज़त मिलती। दूसरी ओर कट्टर हिन्दुओं ने उन्हें हमेशा ग़म और गुस्से की नज़र से देखा कि उनका आदमी न केवल उर्दू में शायरी करता है बल्कि हिन्दी का विरोध करता रहता है। हालांकि सच बात यह है कि फ़िराक़ साहब भारत की मिली-जुली तहज़ीब के रसिया और झंडा उठाने वाले थे। खुद उनकी शख़्सियत भाषायी एकता, साम्प्रदायिक सद्भावना, इंसान दोस्ती और वतन दोस्ती की एक मिसाल थी। जिस सांप्रदायिकता के खिलाफ वह ज़िन्दगी भर लड़ते रहे, नफ़रत करते रहे, उसके खिलाफ खुद उनकी शख्सियत एक नमूना थी। लेकिन अफ़सोस कि फ़िराक़ साहब के इस पहलू को उनके व्यक्तित्व की कुछ कमज़ोरियों, मिज़ाज की नज़ाकतों के आगे पनपने का अवसर नहीं मिला और हिन्दुस्तान का भ्रष्ट व साम्प्रदायिक माहौल आज तक उनकी कलन्दराना शख़्सियत को ठीक से नहीं समझ सका। वह हमेशा इस शेर की तरह रहे-

*ज़ाहिदे तंग नज़र ने मुझे काफ़िर जाना*
*और काफ़िर यह समझता है कि मुसलमाँ हूँ मैं॥*

आज के सुलगते हुए माहौल में जहाँ साम्प्रायिकता का माहौल चारों ओर बना हो, जहाँ नफरत अपने बाल-ओ-पर खोल चुकी हो। तहज़ीब को टुकड़ों-टुकड़ों में देखने की कोशिश की जा रही है। देश, टूटने के कगार में आ पहुँचा हो, ऐसे में 'फ़िराक़' की यह तहरीरें उनकी याद तो दिलायेंगी ही साथ ही सद्भावना का एक नया जज़्बा, इंसान दोस्ती का एक नया पैग़ाम, नया जोश देने में सहायक होंगी, ऐसा मुझे विश्वास है।

मुझे इस लेख के तलाश करने और उसे पेश करने में गर्व महसूस हो रहा है और साथ ही यह एहसास भी कि जो काम हम आज कर रहे हैं उस काम के लिए हमारे बुजुर्गों व पूर्वजों ने न केवल अपने क़लम की सियाही बल्कि अपना खूनेज़िगर खर्च किया और एक स्वस्थ परम्परा कायम की। उसी जोश व जज़्बे की आज फिर ज़रूरत है। हमें यकीन है कि 'हम होंगे कामयाब एक दिन'-

**अली अहमद फ़ातमी**
*उर्दू विभाग*
*इलाहाबाद यूनिवर्सिटी, इलाहाबाद*

*मई 1993 ई.*

हमारा देश इस धरती पर एक बहुत बड़ा देश है। यहाँ तीस करोड़ हिन्दू नौ करोड़ मुसलमान और डेढ़ करोड़ के लगभग दूसरे धर्मों के मानने वाले बसे हुए हैं।

सोचिये कि इस देश की बड़ाई किस बात में है? इस सवाल का ठीक जवाब यह है कि यहाँ कोई निवासी मर्द, औरत या बच्चा, बूढ़ा, चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान या दूसरे किसी धर्म का मानने वाला दुखी न रहे; खाने, पीने, पहिनने, रहने-पढ़ने, लिखने, कमाने और तरक्की करने में उसे कोई रुकावट न हो। इस देश की बड़ाई इस बात में कभी नहीं है कि यहाँ के बसने वालों में किसी एक जाति या एक धर्म के मानने वाले तो सुख चैन से रहें और दूसरी जाति या दूसरे धर्म के मानने वाले दुखी और बेइज़्ज़त होकर रहें। जो सुख या धन किसी को दुखी बनाकर या किसी को निर्धन रख कर या लूट मार करके बेइन्साफी के साथ हासिल किया जायेगा या जो बड़ाई किसी को नीचा दिखा कर या छोटा बना कर पायी जायेगी, न तो वह सुख सच्चा सुख होगा न वह बड़ाई सच्ची बड़ाई होगी। ऐसा सुख या ऐसी बड़ाई पाने का विचार हमारा सबसे बड़ा दुश्मन है।

इस देश में तीस करोड़ हिन्दू बसे हुए हैं। इसमें शक नहीं कि कभी-कभी और कहीं-कहीं मुसलमानों ने हिन्दू और सिख आबादी के एक हिस्से के साथ मार-काट और दुश्मनी की। इसी तरह नौ करोड़ मुसलमानों के एक हिस्से के साथ कुछ हिन्दुओं और सिखों ने भी लूट मार और ज़्यादती की, हार जीत किसी की नहीं हुई, मुसीबत और बर्बादी दोनों पर आयी। अब देखना यह है कि क्या हिन्दुओं के सबसे बड़े दुश्मन मुसलमान हैं? मुसलमानों के सबसे बड़े दुश्मन हिन्दू और सिख, और सिखों का सबसे बड़ा दुश्मन मुसलमान हैं? लेकिन यह बात अब निश्चित रूप से साबित हो चुकी है कि आपस की यह दुश्मनी किसी धर्म या जाति को लाभ नहीं पहुँचा सकती। मुसीबत और बर्बादी हिन्दू, मुसलमान, सिख तीनों पर आयी है, जीत किसी की नहीं हुई, हार सब की हुई।

एक बात का समझ लेना जरूरी है। हिन्दू, मुसलमान और सिख बहकाये ज़रूर जा सकते हैं और उनके विचारों में ज़र्रा भर कर कुछ समय के लिए उनमें आपस में दुश्मनी और लूटमार कराई जा सकती है पर लाखों और करोड़ों की तादाद में संसार में किसी भी धर्म को मानने वाले नीच नहीं हो सकते, यह नहीं हो सकता

कि मुसलमान, मुसलमान होने के कारण भले और सज्जन बन जायें, और हिन्दू और सिख सब के सब या ज़्यादा से ज़्यादा तादाद में अपने धर्म के कारण भले आदमी बन जायें, मुसलमान सब के सब या ज़्यादा से ज़्यादा तादाद में सिर्फ़ इस्लाम पर ईमान रखने के कारण कमीने, नीच और जंगली बन जायें, यह दोनों बातें नहीं हो सकतीं। हिन्दुओं और सिखों का धर्म इसको बड़ा पाप समझता है कि दूसरे धर्म के मानने वाले को कमीना और नीच समझा जाये, मुसलमानों का मज़हब भी इसको बड़ा पाप समझता है कि दूसरे धर्म के मानने वालों को कमीना और नीच समझा जाये। अगर हम इन्सान की इज़्ज़त नहीं कर सकते और अगर हम इन्सान की इन्सानियत पर विश्वास नहीं कर सकते तो हम उन इन्सानों की इज़्ज़त भी नहीं कर सकते जो हमारे ही धर्म के हैं, न उनकी इन्सानियत पर हम विश्वास कर सकते हैं। अगर हम हिन्दू हैं या अगर हम सिख हैं तो हमारा सबसे बड़ा दुश्मन हमारा यह विचार होगा कि मुसलमान नीच हैं और अकारण हमारे दुश्मन हैं। अगर हम मुसलमान हैं तो हमारा सबसे बड़ा शत्रु हमारा यह विचार होगा कि हिन्दू और सिख कमीने और नीच हैं। और सब मुसलमानों के दुश्मन हैं।

**कुछ देर के लिए हिन्दू और सिख की हैसियत से सोचिये :**

1. कोई जाति, कोई देश किसी धर्म के मानने वाले संसार भर से अलग होकर नहीं रह सकते, हिन्दुस्तान के पश्चिम की ओर हज़ारों मील तक मुसलमानों के देश हैं, जिनमें करोड़ों मुसलमान बसे हुए हैं। अगर हम मुसलमानों को अपना दुश्मन समझें या मुसलमानों के दुश्मन बन जायें या मुसलमानों को अपना दुश्मन बना लें तो हिन्दुस्तान के नौ करोड़ मुसलमान हम पर शक करने लग जायेंगे या हमसे लड़ने-मरने पर तैयार हो जायेंगे बल्कि ये करोड़ों मुसलमान और फिर मुसलमानों की बहुत बड़ी आबादी जो बर्मा, चीन, हिन्द, एशिया और रूस में बसी हुई है हमारी जानी दुश्मन हो जायेगी और जब तक संसार कायम है तब तक हमारी दुश्मनी बनी रहेगी और मौक़ा पा कर हम को मिटा देना चाहेगी। अगर आप समझें कि हम भी तीस करोड़ हैं इसलिए मुकाबला बराबर रहेगा तो यह भी मूर्खतापूर्ण विचार है। अमरीका, इंगलिस्तान और संसार के बहुत से बड़े-बड़े देश हिन्दुस्तान के कमज़ोर मुसलमानों का साथ देंगे ताकि हिन्दू और सिख कारोबार में और तिजारत में पनपने और लहलहाने न पायें। इस तरह हिन्दू और सिख जाति के खिलाफ़ संसार के ताक़तवर देशों का संगठन हो जायेगा और बर्बादी के अलावा हमारे हाथ कुछ न लगेगा। संसार भर के राज काज को अपने खिलाफ़ कर लेना अपने आप को मिटा देने के बराबर है।

2. कुछ लोग बिना सोच-विचार के यह कह देते हैं कि पाकिस्तान में जो हिन्दू-सिख बच रहे हैं वह हिन्दुस्तान चले आयें और हिन्दुस्तान के सब मुसलमान पाकिस्तान भगा दिये जायें। यह लोग इतना नहीं सोचते कि जो भगदड़ अभी तक मची है उसने हिन्दुस्तानी सरकार के काम को और हमारे जीवन को कितना कलंकित बना दिया है, हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों पर मुसीबतें टूट पड़ी हैं और अगर अभी एक या डेढ़ करोड़ हिन्दू जो पूरबी और पश्चिमी पाकिस्तान में हैं वह पाकिस्तान चले जायें तो हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों राज्य सैंकड़ों बरस के लिए बर्बाद हो कर रह जायेंगे। हमारा जो बुरा हाल अंग्रेजी राज्य में था इससे भी कहीं ज़्यादा हमारी हालत खराब हो जायेगी और यह देश नर्क बन जाएगा।

आज अगर ये भगदड़ न मची होती तो हमारी सरकार और हमारे देश के पास अरबों रुपया होता जिससे खेती बाड़ी, कारखानों, तालीम और सब को फायदा पहुँचाने वाले और हिन्दुस्तान को बड़ा देश बनाने वाले हमारी उन्नति के सैंकड़ों काम किये जा सकते थे। याद रहे कि जो भगदड़ मच चुकी है। उसका यह नतीजा हुआ है कि अगली चौथाई सदी तक के लिए हमारी तरक़्क़ी रुक गयी है। अगर यह भगदड़ फिर मची तो हमारी सरकार का दम उखड़ कर रह जायेगा और मुसलमानों का जो भी हाल हो, कम से कम हिन्दू और सिख एक सौ बरस के लिए उभर न सकेंगे। मार-काट के भाव से दिल में जोश पैदा होने का मज़ा हमें जरूर मिल सकता है लेकिन यह जोश और यह मज़ा बहुत देर तक कायम नहीं रह सकता और जल्द ही न सही जा सकने वाली मुसीबत, बर्बादी और गिरावट की शक्ल में यह जोश और मज़ा बदल जायेगा। यह अनुचित भाव तथा जोश और इस अनुचित भाव और जोश का मज़ा हमारे सबसे बड़े दुश्मन हैं।

3. कुछ लोग यह सपना देखते हैं कि पाकिस्तान को जीत कर यह अखण्ड हिन्दुस्तान क़ायम कर दिया जायेगा। ये सपना जितना सुन्दर और हौसला बढ़ाने वाला है, उतना ही भयानक है। संसार भर की हुकूमतों ने पाकिस्तान की हुकूमत को मान लिया है और बिना किसी कारण के या झूठा झगड़ा करके पाकिस्तान पर धावा बोल देना मानो संसार भर से लड़ाई मोल लेना है। अगर ये भी मान लिया जाय कि संसार भर के देशों में कुछ देश हिन्दू, सिख जाति का साथ देंगे और कुछ देश मुसलमानों का साथ देंगे तो भी इस लड़ाई का नतीजा यह नहीं होगा कि 'अखंड हिन्दुस्तान' क़ायम हो जाये। 'अखंड हिन्दुस्तान' हिन्दुओं, सिखों और तमाम

मुसलमानों के आपसी प्रेम और मर्ज़ी से ही कायम हो सकता है। मुसलमानों को दुश्मन समझने या दुश्मन बनाने से किसी तरह और किसी समय 'अखंड हिन्दुस्तान' कायम नहीं हो सकता।

4. कश्मीर की आबादी सौ पीछे पच्चासी मुसलमान हैं। कश्मीर का सवाल उलझ-उलझ कर बहुत नाज़ुक बन गया है। अगर हम मुसलमानों को नीच, कमीना, अपने से अलग, अपने से बुरा और अपना दुश्मन समझेंगे तो हम किस मुँह से यह बात कह सकेंगे कि कश्मीर हिन्दुस्तान का हिस्सा बने। आज कश्मीर में जो लड़ाई हो रही है और जिस में हिन्दू, सिख, मुसलमान एक होकर कश्मीर पर हमला करने वालों का मुक़ाबला कर रहे हैं, वह लड़ाई हम कैसे लड़ सकते हैं? हम उस पर विजय कैसे पा सकेंगे अगर मुसलमानों को अपना दुश्मन मान लें, आज अपने कश्मीर की और हिन्दुस्तान की जो सेवा शेख़ अब्दुल्ला कर रहे हैं वह सेवा और वैसी सेवा कोई हिन्दू या सिख नहीं कर रहा है लगे हाथों यह भी सुन लीजिये कि तीन चार लाख रुपये या उससे भी अधिक रोज़ाना कश्मीर में खर्च हो रहा है। अगर हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों में लड़ाई छिड़ गई तो संसार की हुकूमतें इस लड़ाई को दस बरस और चलवायेंगी। इस आग में दुनियाँ की हुकूमतें तो घी डालती जायेंगी जिसमें हिन्दू और मुसलमान जलें। हिन्दू और मुसलमान की लड़ाई दो आदमियों की कुश्ती नहीं है न दो दलों के आदमियों का साधारण मुक़दमा है जिसका फैसला जल्दी से हो जायेगा। यह लड़ाई हमारे लिये मौत का संदेश होगी जिसके कारण हिन्दू और सिख जाति का नाम हमारी सभ्यता, हमारे धर्म और हमारी संस्कृति का नाम संसार से सदा के लिये मिट जायेगा।

5. अगर हिन्दू और सिख यह चाहते हैं कि हिन्दू यूनियन के चार करोड़ मुसलमान भाग कर पाकिस्तान चले जायें या देश भर के नौ करोड़ मुसलमान भाग कर कहीं और चले जायें या रहें तो हिन्दुओं और सिखों के गुलाम बन कर रहें तो इससे अधिक नीचता की भावना दूसरी नहीं हो सकती। यह भाव, यह जतन, यह साजिश और ऐसी लड़ाई मुसलमान को नुक़सान पहुँचाने के बजाय हिन्दुओं और सिखों को मिटा देगी। दक्षिण अफ्रीका का यूरोप की कौमों ने पता चलाया, उस पर विजय प्राप्त की, वहाँ बसे और बसाया। आज दक्षिण अफ्रीका और मलाया में लाखों हिन्दू और मुसलमान बस रहे हैं पर वह आज़ाद नहीं है। हम यूरोप की जातियों की यह बात नहीं मानते कि दक्षिण अफ्रीका और मलाया से हिन्दू और मुसलमान भाग

आयें या यूरोप की जातियों से उनके अधिकार, उनका मान और उनकी इज़्ज़त किसी तरह कम रहे। वहाँ की सरकारों में हम पूरा-पूरा हिस्सा चाहते हैं। वहाँ के जीवन में हम पूरा-पूरा हिस्सा चाहते हैं। धर्म, रहन-सहन, संस्कृति और भाषा अन्तर हिन्दुओं और मुसलमानों की जाति, रूप, रंग यूरोप वालों को किसी तरह कम रखें हम उसे नहीं मानते। हालांकि दक्षिण अफ्रीका और मलाया का पता लगाने वाले इन देशों को बनाने और बसाने वाले यूरोप वाले ही रहे हैं। अगर हम हिन्दुस्तान में एक हज़ार बरस से बसे हुए मुसलमानों के अधिकार न मानें और उन्हें देश से बाहर भगाने की ठान लें तो दक्षिण अफ्रीका और मलाया में हिन्दुस्तानियों को या तो मिटा दिया जायेगा या उन्हें वहाँ से मार भगाया जायेगा और हम कुछ बोल भी नहीं सकेंगे। हिन्दू-मुसलमान का सवाल संसार भर में हिन्दुस्तानियों के जीवन और मान का सवाल है। इस समस्या को हिन्दुस्तान में ही सीमित नहीं रखा जा सकता।

6. रूस में 70 करोड़ से ज़्यादा ऐसे लोग बसते हैं जो मुसलमान नहीं हैं और मुसलमानों की एक करोड़ से कम आबादी है। चीन में मुसलमानों की आबादी सौ पीछे पाँच छः यानी दो करोड़ के लगभग है पर आज तक वहाँ कोई फिरक़ावाराना झगड़ा नहीं हुआ। वहाँ के राष्ट्रीय जीवन में, वहाँ की उन्नति और सुख में मुसलमान दूसरे के साथ बराबर भाग ले रहे हैं। रूस और चीन में मुसलमानों के धर्म, संस्कृति, भाषा और रहन-सहन के ढंग की पूरी-पूरी रक्षा होती है। हिन्दुस्तान की कई हज़ार साल पुरानी संस्कृति जिस पर हम नाज़ करते हैं, संसार की निगाह में कितनी गिरी हुई और कलंकित समझी जायेगी अगर हमने यहाँ मुसलमानों को बसने और फलने फूलने न दिया और हमारे मुकाबले में चीन और रूस ने ऐसा करके दिखा दिया तो हिन्दू संस्कृति आईने में अपना भयानक रूप देखकर शर्मिंदा होगी और फ़ख्र से अपना सर ऊँचा न कर सकेगी।

7. मान लीजिये कि हिन्दुस्तान से बाहर संसार के किसी हिस्से में तीन चार करोड़ हिन्दू और सिख किसी कारण से जा कर बस जायें और इस देश की आबादी में हिन्दू और सिख सौ पीछे बीस पच्चीस उसी तरह हो जायें जिस तरह हिन्दुस्तान भर की आबादी में मुसलमान सौ पीछे बीस पच्चीस हैं तो ऐसी हालत में हम क्या चाहेंगे? अगर इस देश वाले वहाँ के सौ पीछे बीस पच्चीस हिन्दुओं और सिखों को विदेशी, नीच, कमीना और अपना दुश्मन समझें और उनको वहाँ से मार भगाना चाहें या उन पर ज़ोर ज़बरदस्ती से अपनी भाषा अपनी संस्कृति लादना चाहें तो क्या हम

इस देश वालों के खून के प्यासे न हो जायेंगे? क्या हम उनको उन्नत और सभ्य जाति मानेंगे? या संसार उनको तरक्कीयाफ्ता और मुहज़्ज़ब मानेगा? अगर हम न्याय और इन्सानियत के नाते यह चाहते हैं कि हिन्दू और सिख दूसरे देश में जा कर बसें और इज़्ज़त के साथ जीवन बितायें तो हम हिन्दुस्तान से मुसलमानों का देश निकाला या हिन्दुस्तान में मुसलमानों की बर्बादी कैसे चाह सकते हैं?

8. हिन्दुस्तान के हिन्दू और मुसलमान मानव जाति के ही अंश हैं। कम से कम ऐसा तो न समझें कि बाकी दुनिया के इन्सानों से हिन्दुस्तान में बसने वाले हिन्दू और मुसलमान नीच है। मिश्र मुसलमानों का देश है। वहाँ एक बड़े इलाके में बहुत बड़ी तादाद में ईसाई बसे हुए हैं, अंग्रेजी सरकार ने वहाँ के मुसलमानों और ईसाईयों के बीच नफ़रत की आग भड़कानी चाही पर वहाँ के मुसलमानों ने यह बात नहीं मानी कि मिश्र के ईसाई नीच, कमीने और देशद्रोही हैं। वहाँ के ईसाई अपने मुसलमान भाइयों पर फ़ख्र करते है और दोनों कन्धे से कन्धा जोड़ कर मिस्र की तरक़्क़ी  और आज़ादी के लिए लड़ रहे हैं। जापान में लाखों की संख्या में मुसलमान हैं और उनकी राज्य भक्ति या देशप्रेम किसी से कम नहीं। अब हिन्दू संस्कृति का पल्ला भारी रहा या दूसरी संस्कृतियों का? मिश्र के मुसलमान अपने समान ईसाईयों को बराबरी की जगह दिये हुए हैं। रूस, चीन और जापान वाले जो मुसलमान नहीं हैं अपने समाज में मुसलमानों को बराबर का स्थान दिये हुए हैं और एक हम हैं कि हिन्दू और सिख समाज में मुसलमानों को इन्सानियत की जगह देना पसंद नहीं करते और इन्हें भयानक समझते हैं। ज़रा दुनिया पर नज़र डालिये तब हिन्दू मुस्लिम सवाल पर ठीक-ठीक प्रकाश पड़ेगा। हम दूर क्यों जायें हमारे पड़ोस में बर्मा है जो हिन्दुस्तान के बाद आज़ाद हुआ है। हमारे देश से मिला हुआ लंका है। लंका भी हिन्दुस्तान के बाद आज़ाद हुआ है। बर्मा और लंका दोनों देशों में सौ पीछे चार पाँच मुसलमान बसे हुए हैं। लंका के मुसलमानों की मातृभाषा अरबी है पर बर्मा और लंका वाले मुसलमानों को अपने देशों में बराबरी की जगह दिये हुए हैं।

9. अगर आप यह कहें कि और देशों में कुछ भी हो, और देशों के मुसलमान कितने ही सज्जन हों पर 'हिन्दुस्तान के मुसलमान' सिर्फ नीच और कमीने हैं तो ऐसा समझना, यह कहना भारत माता के लिए और हिन्दू संस्कृति के लिए कितनी बड़ी गाली है। दूसरे देशों का जीवन और संस्कृति इतनी पवित्र है कि वहाँ के मुसलमान सज्जन हो जाते हैं और हमारे देश की मिट्टी और संस्कृति इतनी नीच और

सड़ी हुई है कि वह मुसलमानों को कमीना बना देती है। हिन्दुस्तान की मिट्टी और हिन्दुस्तान की संस्कृति में तो वह जादू होना चाहिए जो संसार को मोह ले। हम इस देश में सौ पीछे अस्सी होते हैं। यहाँ की सौ पीछे बीस आबादी को अगर हम अपना दुश्मन बनाए हुए हैं या उन्हें जंगली समझते हैं तो यह हमारी ही सभ्यता का मुँह काला करती है। महान हिन्दुस्तान अगर इस देश में पैदा होने वाले मुसलमानों की दोस्ती और प्रेम न हासिल कर सका तो उसे हिन्दू का ही दोष माना जायेगा और इसके लिए हिन्दू संस्कृति दोषी ठहराई जायेगी।

10. 1857 ई. के गदर में हिन्दू और मुसलमान एक होकर विदेशी शासन के खिलाफ लड़े थे। आज़ादी के खिलाफ थे तो सौ पीछे 95 मुसलमान अंग्रेजों के खिलाफ लड़ रहे थे लेकिन इस आज़ादी की जंग में देशी फौजों को सफलता न मिली। इसका कारण यह नहीं था कि मुसलमानों की सहायता से हिन्दू कुचल दिये गये थे बल्कि इसका कारण यह था कि हिन्दू जाति और हिन्दू गोरखों और सिखों के हाथों से आज़ादी के दीवान कुचलवाये गये थे। अगर उनकी मदद अंग्रेजों को न मिलती तो 1857 ई. के गदर में अंग्रेजों के पाँव उखड़ गये होते। सोचने और समझने की बात है कि हमारे हिन्दू और सिख भाइयों में से ही लाखों आदमी अँग्रेजों के इशारे पर देश के इतने बड़े दुश्मन बन गये थे लेकिन मुसलमान देश के दुश्मन साबित नहीं हुए तो आखिर कब से यह मुसलमान देश के ऐसे दुश्मन बन गये कि क़यामत तक हम उन से लड़ाई मोल लेने के लिए तैयार होना चाहते हैं? क्या कोई जादू हो गया कि एक हज़ार बरसों से हिन्दुस्तान में बसे हुए मुसलमान संसार के सब से खराब नीच और कमीनी जाति बन गये। अभी बीस पच्चीस साल की बात है कि जलियाँवाला बाग़ में हिन्दुओं, मुसलमानों और सिखों के खून की कुर्बानी दी गयी थी और हिन्दुओं, मुसलमानों और सिखों पर जनरल डायर के हुकुम से गोली चलाने वाले हिन्दू गोरखे ही थे। फिर इसके बाद जब महात्मा गाँधी की रहनुमाई में हिन्दुस्तान भर में आज़ादी का आन्दोलन पूरे जोर से शुरू हुआ तो उसमें हिन्दुओं से तादाद में चौथाई होते हुए भी मुसलमानों ने हिन्दुओं के बराबर हिस्सा लिया। जेल जाने में, 'असहयोग' करने में, मार और लाठियाँ सहने में, कटने-मरने और मिटने में, स्कूलों, कॉलेजों और कौंसिलों का बॉयकॉट करने में और किताबों को छोड़ने में मुसलमान हिन्दुओं से पीछे नहीं रहे। हक़ीकत यह है कि एक हज़ार मुसलमानों में से चार सौ मुसलमान इस लड़ाई में शामिल हुए। अंग्रेजों ने जब अपने पाँव उखड़ते देखे तो उन्होंने फिर हिन्दू, मुसलमानों में फूट डाल दी और बना बनाया

काम बिगड़ गया। इसके बाद फिरक़ापरस्ती का ज़हर सारे देश में फैलाया गया और नफ़रत की आग देश भर में भड़क उठी जिसे अंग्रेजों की पालिसी बराबर हवा देती रही फिर भी पूरी मुसलमान जाति नहीं बिगड़ी। अब से दो तीन साल पहले बड़ी लड़ाई के खत्म होने पर जब हमारे नेता जेलों से छूटे और सूबों की असेंबलियों और कौंसिलों का चुनाव हुआ तो हिन्दुओं और सिखों के साथ 33 प्रतिशत मुसलमानों ने मुस्लिम लीग का साथ न देकर काँग्रेस का साथ दिया। कई जगहों पर तो काँग्रेस का साथ देने वाले मुसलमान वोटर अपने सहधर्मियों के हाथों घायल किये गये और मार डाले गये। इनके बाल-बच्चों को बेइज़्ज़त किया गया। उनके मुँह पर थूका गया, उनके घर लूट लिये गये और जला दिये गये। उनके जीवन के लिए खतरा पेश हो गया पर ये बहादुर मुसलमान देश प्रेम की राह से नहीं डिगे और सरहदी सूबे में तो 33 प्रतिशत नहीं सौ पीछे अस्सी मुसलमानों ने काँग्रेस को वोट दिया। सैंकड़ों ऐसी मिसालें दी जा सकती हैं जिनसे चमकते हुए सूरज की तरह ये बातें साफ़ हो जाती हैं कि करोड़ों मुसलमान भयानक से भयानक और गम्भीर हालत में भी न हिन्दुओं के दुश्मन बने, न सिखों के। न देश से गद्दारी की। हिन्दू और सिख मुसलमानों को अपना सब से बड़ा दुश्मन समझने के बदले साम्प्रदायिकता को अपना सबसे बड़ा दुश्मन समझें और साम्प्रदायिकता से बच कर उस नये हिन्दुस्तान को बनायें, जहाँ हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई, पारसी सभी इज़्ज़त के साथ ज़िन्दगी बिता सकें और सब के लिए तरक़्क़ी करने का मौका हो। थोड़े ही दिनों में हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के नौ करोड़ मुसलमान इस देश की रक्षा और तरक़्क़ी के लिए एक बड़ी भारी ताकत बन जायेंगे और हिन्दुओं और सिखों के साथ कन्धे से कन्धा जोड़ कर मुल्क की ज़िन्दगी को ऊँचा उठायेंगे।

11. साम्प्रदायिकता हम को अन्धा बना देती है। न हम अच्छी चीजों को देख पाते हैं न बुरी चीज़ों को। जब नवाखली में और पूरबी बंगाल के कुछ हिस्सों में हज़ारों हिन्दू स्त्री-पुरुष और बालक मार डाले गये और हज़ारों घर लूट लिये गये तो इसके बाद तुरन्त ही बिहार के हिन्दुओं ने मुसलमानों से इसका बदला लिया। हज़ारों मुसलमान मार डाले गये और हज़ारों मुसलमानों के घर जलाये गये और लूट लिये गये। बहुत से नीच और बहके हुए हिन्दू इसे उचित बदला समझते रहे और इसे हिन्दू जाति का निशान मानते रहे लेकिन हुआ क्या? मारे जाने वाले, अपमानित किये जाने वाले और बर्बाद किये जाने वाले मुसलमानों में एक बड़ी तादाद ऐसे मुसलमानों की थी जो जीवन भर मुस्लिम लीग से लड़ते रहे और तन-मन-धन से

गाँधी जी और काँग्रेस के हुकुम का पालन करते रहे। साम्प्रदायिकता के पागलपन और जोश ने यह नामुमकिन बना दिया कि देश प्रेम रखने वाले मुसलमानों को हम पहचान सकें और उनकी रक्षा कर सकें। तो नवाखली और पूर्वी बंगाल के मुसलमानों का बदला बिहार के मुसलमानों से लेना, चाहे वह कांग्रेसी हो या मुस्लिम लीग, परले दरजे की कायरता और कमीनापन का सुबूत है पर देश प्रेम रखने वाले मुसलमानों को जिन्हें हिन्दू धर्म और देश प्रेम के नाम पर काट डाला गया, ऐसा बड़ा पाप था जिसके कलंक का टीका हम हिन्दुओं के माथे से मिटाया नहीं जा सकता। इससे बिल्कुल उल्टा सिंध में हुआ। सारे हिन्दुस्तान में हिन्दू-मुस्लिम दंगों का शोर मचा हुआ था। लाखों मुसलमानों ने सिंध में भाग कर शरण ली थी। वहाँ के सौ पीछे 85 मुसलमान हैं और सौ पीछे 15 हिन्दू पर सिंध के लाखों मुसलमानों ने पल भर के लिए भी इन्सानियत को नहीं छोड़ा। वहाँ के हिन्दू डर कर सिंध से भागना चाहते थे। सिंध के मुसलमानों ने कुरआन हाथ में ले कर और अपनी आँखों में आंसू भर कर अपने हिन्दू भाइयों से कहा कि तुम अपना घर मत छोड़ो, सिंध उतना ही तुम्हारा है जितना हमारा। पहले हम मुसलमान गुन्डों के हाथों मारे जायेंगे तब तुम पर आँच आने पायेगी। यह सच है कि पागलपन की हालत में सिंध से बहुत से हिन्दुओं और सिखों को भाग आना पड़ा और कुछ सिख मार भी डाले गये लेकिन इस बात में सिंध के किसी मुसलमान का हाथ नहीं था। ये हरकत थी बाहर से पहुंचे हुए मुसलमानों की और ये बाहर से पहुंचे हुए मुसलमान ज़्यादातर ऐसे थे जिनका हिन्दुस्तान में सब कुछ लुट गया था और उनके मन में बदला लेने की भावना भड़क उठी थी।

12. अगर हम हिन्दू या सिख होने के नाते यह कहें कि मार-काट, लूट, दंगा न हम करते हैं न करना चाहते हैं बल्कि ऐसे काम पहले मुसलमान करते हैं फिर उसका बदला लेने के लिए या उसका जवाब देने के लिए हम मजबूर हो जाते हैं, तो सोचने की बात यह है कि इस देश के किसी हिस्से में अगर मुसलमान मार-काट, लूट-मार और दंगा करें और उसका जवाब हिन्दू और सिख दें, चाहे देश के उसी हिस्से में या किसी दूसरे हिस्से में तो क्या यह सिलसिला कभी बन्द हो सकता है? या क्या इसमें किसी एक की जीत हो सकती है? या अब तक हुई है? कलकत्ता, नवाखाली, पूर्वी बंगाल, बिहार, गढ़ मुक्तेश्वर और हमारे सूबे के पश्चिमी जिलों में फिर पूर्वी और पश्चिमी पंजाब में और देश के कुछ और दूसरे हिस्सों में भी ऐसे भयानक और शैतानी काम हुए, जिनकी कल्पना करना कठिन है। तो क्या इससे एक धर्म के मानने वालों की जीत हुई? हिन्दू जीते? सिख जीते? या मुसलमान जीते? या सब हारे?

किसी एक धर्म के मानने वालों की बर्बादी क्या दूसरे धर्म के मानने वालों की बर्बादी से कम हुई? हिन्दू, मुसलमान, और सिख इसमें कौन हैं जो इन भयानक घटनाओं के हो चुकने के बाद गर्व कर सकें? और दूसरे धर्म के मानने वालों के मुकाबलों में अपनी जीत का डंका पीट सकें? यह भयानक लड़ाई जैसी हुई है अगर उससे सौ गुना बड़ी हो और एक सौ साल भी जारी रहे तो भी बर्बाद सब हो जायेंगे और अपनी जीत का झंडा कोई भी न फहरा सकेगा। यह बदला सफल हो ही नहीं सकता। यह लड़ाई ऐसी है जैसे दो सांप लड़ते हैं यानी जीत किसी एक सांप की नहीं होती और दोनों सांप मर जाते हैं। यह पहले ही बताया जा चुका है कि यह लड़ाई एक ओर 30 करोड़ हिन्दू और सिख और दूसरी ओर नौ करोड़ मुसलमानों की लड़ाई रहने ही न पायेगी और इसका नतीजा हिन्दू या मुसलमान किसी एक की जीत न होगा बल्कि दोनों की सदा के लिए गुलामी और बर्बादी होगी।

यह भी खुली हुई बात है कि उस हिन्दू और सिख से कमीना और नीच कोई हो ही नहीं सकता जो कुछ मुसलमानों की ज़्यादती और अत्याचार का बदला दूसरे बे-कसूर मुसलमान स्त्री-पुरुष और बच्चों से ले। ऐसा करना हिन्दू और सिख धर्म को कलंकित करना है। ऐसा करना हिन्दू और सिख होने का सबूत नहीं बल्कि अपने आप को हैवानों से भी नीच सिद्ध करना है। गन्दे से गन्दा राष्ट्र स्वार्थ भी ऐसा करने से पूरा नहीं हो सकता। शक्तिमान, मर्यादा, धर्म, संस्कृति और सम्पत्ति वगैरह किसी तरह का लाभ बदला लेने से नहीं हो सकता। कमीने इस तरह सोचते हैं कि हमने कहीं दूर हिन्दुओं और सिखों पर किये जाने वाले अत्याचारों का बदला अपने पड़ोसी मुसलमान स्त्री, पुरुषों, बच्चों को लूट कर, उनका घर जला कर, उनकी हत्या करके और उन्हें अपमानित करके लिया। हिन्दू और सिख धर्म के बनाने वाले ऐसे हिन्दू और सिख का मुंह तक न देखना चाहेंगे। यहीं नही कि धर्म के नाम पर बेकसूर लोगों से बदला लेना परले दरजे का कमीनापन है बल्कि यह भी है कि यह बदला कोई बदला भी नहीं है, न ऐसा करके मुसलमानों को कोई ऐसा सबक़ सिखाया जा सकता है, न उनके होश ठिकाने किये जा सकते हैं, और न उनको दबाया जा सकता है, न उनकी शरारत कम की जा सकती है, न उनको कमजोर बनाया जा सकता है, न उनको किसी तरह का नुक़सान पहुंचाया जा सकता है। दस बीच-पचास-लाख मुसलमान घरानों की हत्या कर देने और फूंक देने से इस देश से मुसलमान जाति को मिटाया नहीं जा सकता और न मुसलमान जाति को कमज़ोर बनाया जा सकता है। चाहे यह काम हत्या और लूट का बदला लेने के लिए क्यों न किया जाये। इस

बात को सिद्ध करने से भी काम नहीं चलेगा कि मार-काट मुसलमानों की तरफ से ही शुरू होती है।

13. अब सवाल यह पैदा होता है कि अगर मुसलमान कहीं लूटमार शुरू कर दें तो हम हिन्दू-सिख हाथ धरे बैठे रहें? इस सवाल का जवाब गुलाम आदमियों की तरह सोचने का ज़माना अब नहीं रहा बल्कि एक आज़ाद कौम के नाते इस सवाल का जवाब सोचना चाहिए। पाकिस्तान में नहीं बल्कि हिन्दुस्तान में जो चार करोड़ मुसलमान बसे हुए हैं उनके सम्बन्ध में हम इस सवाल पर विचार करें। इसका पहला जवाब तो यह है कि यह सवाल उठता ही नहीं। यहाँ के सौ पीछे आठ नौ मुसलमानों को कुत्ते ने नहीं काटा है के वह यहां की सौ पीछे 90 आबादी पर टूट पड़ें, अगर यह मान ही लिया जाये कि मुसलमानों की ओर से कुछ दंगे हो सकते हैं तो वह बहुत सीमित रूप में ही हो सकते हैं।

अब हिन्दू-मुसलमानों को लड़ाने वाले अंग्रेज यहां नहीं रहे। यहां प्रजा राज है। सेवा, पुलिस, अधिकारी, अदालत, जेलखाने वगैरह सब अपने हैं और अशान्त वातावरण में उपद्रव करने वालों को बात ही बात में रोका जा सकता है।

अब पाकिस्तान पर नज़र दौड़ायें। अगर वहां हिन्दू और सिखों को सताया जा रहा है तो इसका जवाब यह तो नहीं हो सकता कि हिन्द के मुसलमानों से इस तरह का बदला लिया जाये। हिन्द की सरकार पाकिस्तान की सरकार से उन तमाम तरीकों से जो एक सरकार दूसरी सरकार के साथ करती है, इस झगड़े को सुलझायेगी। ऐसी हालत में यह कोई इलाज नहीं है कि तलवारें फौरन म्यान से बाहर निकाल ली जायें और मुसलमानों पर हमला बोल दिया जाये या पाकिस्तान पर धावा बोल दिया जाये। सैंकड़ों उपाय हैं जिन्हें काम में लाकर हिन्द सरकार पाकिस्तान की हुकूमत पर असर डाल सकती है। ऐसा करने में समय लगता है, संतोष की ज़रूरत होती है। अगर पाकिस्तान में अशान्ति फैलाई जाये तो पाकिस्तान की हुकूमत अपने ही घर में अपने लिये आफत मोल ले लेगी। पाकिस्तान सरकार ने अगर पाकिस्तान में हज़ारों लाखों लोगों को लूट मार करने से न रोका तो यह हज़ारों लाखों मुसलमान हिन्दुओं को लूट चुकने और मिटा चुकने के बाद पाकिस्तान की ही हुकूमत पर टूट पड़ेंगे। यह और बात है कि कुछ दिनों के लिए नतीजे को सोचे बिना ही कुछ लोग पाकिस्तान में यह चाहें कि हिन्दू-मुस्लिम लड़ाई वहां होती रहे

पर ऐसा होने से वहां ऐसी अशान्ति फैल जायेगी कि खुद वहां के मुसलमान मुस्तक़िल तौर पर घाटे में रहेंगे। यह बात आगे चल कर समझ में आ जायेगी। अभी इस सवाल के कुछ ज़रूरी पहलुओं पर हम ठंडे दिल से विचार करें।

14. ऐसी बात हरगिज़ नहीं है कि हिन्दुओं, मुसलमानों और सिखों में किसी एक धर्म को मानने वाले दूसरों से अच्छे या बुरे हों। तीनों शान्ति चाहते हैं, तीनों सुख का जीवन चाहते हैं, तीनों जीवन की अच्छी-अच्छी चीजों की इज़्ज़त करते हैं पर अंग्रेजों ने हमें गुलाम बनाकर भुक्कड़, बेरोज़गार और अनपढ़ बना रखा था। यह सच है कि थोड़े से खुशहाल पढ़े-लिखे हिन्दू, मुसलमान और सिख इतने कमीने और नीच बन जाते हैं, इतने कट्टर बन जाते हैं। क्रोध और घृणा के ऐसे अवतार बन जाते हैं कि अपने धर्म वालों में लाखों आदमियों को भड़का देते हैं लेकिन अगर सौ फीसदी हिन्दू, मुसलमान और सिख उचित और ऊँची शिक्षा पा सकें और हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की सरकारों की सहायता से काम पर लगा दिये गये और खुशहाल बना दिये गये तो ऐसा पढ़े लिखे और इज़्ज़त से जीवन बिताने वाले हिन्दुओं, मुसलमानों और सिखों को आपस में कभी लड़ाया नहीं जा सकता। पढ़े-लिखे के बड़े से बड़े झगड़े वह रूप नहीं धारण कर सकते जिसका उदाहरण बंगाल, बिहार, पंजाब और देश के दूसरे भागों में दिखाई दिया जो थोड़े से पढ़े लिखे खुशहाल पर नीच हिन्दू, मुसलमान और सिख अपने मूर्ख और अनपढ़ सहधर्मियों को नहीं भड़का सकेंगे। जो भयानक दंगे पिछले दिनों हुए हैं उनमें शायद ही कोई एक अच्छी तरह पढ़ा-लिखा हिन्दू या मुसलमान या सिख शरीक हुआ हो। अपराध धर्म का नहीं है अपराध है हमारी उस बड़ी दशा का जो अंग्रेजों ने बना रखी थी। उस मूर्खता, बेरोज़गारी और गैर ज़िम्मेदार ज़िन्दगी का जिसे अंग्रेजों ने हमारे लिए जरूरी बना रखा था। हिन्दू-मुसलमान और सिख एक दूसरे को मिटा नहीं सके और इन तीनों का मिल-जुल कर रहना और इज़्ज़त का जीवन बिताना इस तरह मुमकिन बनाया जा सकता है कि पूरा समाज और पूरी सरकार रचनात्मक कामों में लग जाये और इस दस पंद्रह बरस के अन्दर देश के जीवन को रचाया जाय, बनाया जाय, संवारा जाय, और उन्नति की जाय। हमें हर धर्म के मानने वालों की इज़्ज़त करनी चाहिए इसलिये कि वह इन्सान है। इन्हीं दिनों भयानक दंगों में भी सौ पीछे दस पांच ही हिन्दू, मुसलमान या सिख शरीक हुए थे। पूरी कौम मार काट में नहीं पड़ी थी और सैंकड़ों उदाहरण इस बात के मिले हैं कि हिन्दुओं, मुसलमानों और सिखों ने अपने सहधर्मियों के हमलों से दूसरे धर्म वालों को अपनी जान पर खेल कर बचाया। सिंध

के मुसलमानों का हाल हम बता ही चुके हैं और यह सब बातें हम इसलिये कह रहे हैं कि हमारे दिलों में यह बात बैठ जाये कि किसी भी कौम को या किसी धर्म के मानने वालों को धर्म और कौमियत के कारण नीच और कमीना समझना खुली हुई गल्ती है। सिर्फ मूर्ख ऐसा समझते हैं। हमें अपने विचारों, भावों और घटनाओं को सोच विचार की रोशनी में समझना चाहिए। यह सच है कि इतना कष्ट किसी और चीज़ से नहीं होता जितना अपने भावों और विचारों को बदलने से होता है। पर इस कष्ट को अगर हम सह नहीं सकते, अगर हम अपने अनुचित भावों और अनुचित विचारों को बदलने का कष्ट सहन नहीं कर सकते तो हमारे यही आनन्द देने वाले अनुचित विचार और अनुचित भाव हमको मिटा देंगे। साम्प्रदायिक भावना और विचार देखने में बहुत सुन्दर मालूम होते हैं पर वह हमारे सबसे बड़े दुश्मन हैं। साम्प्रदायिकता हमें डस लेगी। ऐसा डसेगी कि हम हिल कर पानी भी न मांग सकेंगे। इस सांप का सूंघा हुआ लहर नहीं लेता।

15. जब 1937 में कौंसिलों और असेंबलियों के लिए देश भर में चुनाव हुए तो देश भर के मुसलमानों ने काँग्रेस की सहायता की। यहां तक कि मुस्लिम लीग के हज़ारों काम करने वालों ने कांग्रेस का पूरा-पूरा साथ दिया। जब 1942 में महात्मा गांधी और कांग्रेस के सब नेताओं के गिरफ्तार हो जाने के बाद देश भर में आजादी की लहर दौड़ गयी और इतना बड़ा आन्दोलन उठ खड़ा हुआ कि अंग्रेजी राज्य के पांव उखड़ने लगे तो अंग्रेज गवर्नर जरनल, फौजी, अफसरों और बड़े-बड़े अंग्रेज अधिकारियों और गुलामी चाहने वाले बहुत से हिन्दू-मुसलमान अफसरों की ओर से इस बात का जतन किया गया कि यह आन्दोलन हिन्दुओं और मुसलमानों की लड़ाई बन जाये। यह साजिश सफल न हुई। जिन्ना साहब ने भी एक बार नहीं बार-बार इस बात को दुहराया कि 1942 का आन्दोलन मुसलमानों पर हिन्दू राज कायम करने के लिए है और इससे मुसलमानों को बहुत बड़ी हानि होगी, तब भी देश में एक कोने से दूसरे कोने तक मुसलमानों ने आज़ादी के इस संग्राम में यही नहीं कि कोई रुकावट पैदा नहीं कि बल्कि सैंकड़ों तरह से इस लड़ाई को बढ़ाने में मदद दी।

16. नेता जी सुभाष चन्द्र बोस की आज़ाद हिन्द फ़ौज में हिन्दू-मुसलमानों ने बराबर का हिस्सा लिया। शाही हिन्दुस्तानी बेड़े में जो विद्रोह अंग्रेजों के खिलाफ हुआ और हिन्दुस्तान की आज़ादी का झंडा फहराया गया उसमें लाखों मुसलमान और हिन्दू साथ-साथ थे। यहां तक कि बम्बई की तीस चालीस लाख आबादी में ऐसा

मालूम होता था कि अंग्रेजी राज्य ख़त्म हो गया है। इसी तरह कलकत्ते की हड़ताल और देश में कई और जगह जो हड़तालें या आज़ादी के जो आन्दोलन हुए सब में हिन्दू और मुसलमान कन्धे से कन्धा जोड़ कर अत्याचार का मुकाबला करते रहे। हमें तीस करोड़ हिन्दुओं, कई लाख सिखों ने करोड़ों मुसलमानों के बारे में अंधाधुंध राय नहीं कायम करनी चाहिए। हमें अपने सोच-विचार को क्रोध और नफरत के भावों पर कुर्बान नहीं कर देना चाहिए। हिन्दुओं, मुसलमानों और सिखों में बहुत भयानक दंगे हुए और नफ़रत की चिंगारियां देश भर में, उसी देश भर में क़त्ल और खून हुए पर हमें उन सैंकड़ों घटनाओं को भूलना नहीं चाहिए जो इस बात का सबूत हैं कि हिन्दू, मुसलमानों और सिखों में मिल-जुल कर रहने और जीवन के पथ पर आगे बढ़ने की पूरी-पूरी शक्ति है। अलग-अलग धर्म के मानने वालों में जो गुत्थियां पैदा हो गयी हैं उनको सुलझाने के लिए एक दूसरे के खून में डूबी उंगलियां काम नहीं देतीं।

17. इस देश में अलग-अलग धर्म के मानने वालों के जीवन आपस में किस तरह गुत्थे और जकड़े हुए हैं, आपस में किस तरह गोश्त और खून का सम्बन्ध है, यह जानने और समझने के लिए असली हालत पर विचार करने की ज़रूरत है। हम सिर्फ कुछ उदाहरण देंगे। अगर हिन्द से कुल मुसलमानों को भगा दिया गया तो बनारस के पीतल का वह काम जो सिर्फ मुसलमान करते हैं, जो संसार भर में मशहूर है और जिससे करोड़ों रुपया विदेशों से हिन्दुस्तान आता है बर्बाद हो जायेगा। पीतल के कारीगर सब के सब मुसलमान हैं और पीतल के इस बारीक काम की दुकानों और व्यापार सबका सब हिन्दुओं का है जिससे हिन्दुओं के सैंकड़ों घराने लाखों रुपया कमाते हैं और कई सौ बरसों से कमाते आ रहे हैं। मज़दूर सिर्फ मुसलमान हैं पर ऐसे मज़दूर जिनका स्थान हिन्दू मज़दूर नहीं ले सकते। यही हाल बनारस के रेशम और बनारसी साड़ियों का है। इसके कारीगर भी मुसलमान हैं और व्यापारी सब हिन्दू हैं।

मुरादाबादी बरतनों का भी यही हाल है। वह दुकानें सब की सब हिन्दुओं की हैं और कारीगर सब के सब मुसलमान हैं। हिन्दुस्तान में कालीन का काम और कश्मीर में लकड़ी, ऊन, रेशम, सोने-चांदी और दूसरी तरह की कारीगरियाँ सौ पीछे 90 मुसलमानों के हाथ में हैं पर कारोबार का बहुत बड़ा हिस्सा हिन्दुओं के हाथ में है। हिन्द में लाखों ऐसे मुसलमान बुनकर हैं जिनके बनाये हुए कपड़े बहुत सुन्दर

होते हैं लेकिन सूत हिन्दुओं की मिलों से आता है या हिन्दू-मुसलमान दोनों के कते हुए सूत को यह मुसलमान बुनकर काम में लाते हैं। लखनऊ के खिलौनों की नज़ाकत और सुन्दरता दूसरी जगह नहीं मिलेगी, उनके भी बहुत से बेचने वाले हिन्दू हैं और बनाने वाले मुसलमान। आतिश बाजी बनाने की कला सिर्फ मुसलमानों के हाथ में है, खुशबू और तेल अच्छे से अच्छा हिन्द में ज़्यादातर मुसलमान ही बनाते हैं, कपड़ा रंगने वाले भी ज़्यादातर मुसलमान हैं। संगीत कला में भी मुसलमानों ने कमाल दिखाया है। इस तरह हमारे राष्ट्र जीवन के सैंकड़ों कारोबार मुसलमानों के सहारे चमक रहे हैं। मुसलमानों को यहां से हटा देना हमारे राष्ट्रीय जीवन के उन चमकते हुए पहलुओं को मिटा देना है और ऐसा करके हम हिन्द को और हिन्दुओं को इतना नुकसान पहुंचायेंगे जिसको हम कभी पूरा नहीं कर सकते। मुसलमान कारीगर तो पाकिस्तान का रास्ता लेंगे और उजड़ जायेगा हिन्दुस्तान।

18. डर और घबराहट, गुस्सा और नफ़रत सामने की सच्चाई को भी छुपा देते हैं, कुछ लोग कहते हैं कि हिन्द में चार करोड़ मुसलमान समय पर गद्दारी कर जायेंगे। हमारे देश की तारीख़ में जब मुसलमान यहां नहीं आये थे उस समय भी कमज़ोर और लापरवाह हिन्दू हुकूमतों के खिलाफ भयानक षड़यन्त्र (साजिश) हिन्दुओं ही ने किये। यह डर तो हर राज्य को रहता है कि उसकी आबादी का एक भाग हुकूमत को उलट देगा। प्रजा राज्य तो तभी बचा हुआ रह सकता है जब उसकी पलक न झपके। राज्य संभालना खेल नहीं है। मुसलमानों को यहां से निकालकर राज को जो डर है उसे दूर नहीं किया जा सकता। हम बता चुके हैं कि पाकिस्तान कश्मीर को हड़प लेना चाहता है। पर शेख अब्दुल्ला कश्मीर के सौ पीछे अस्सी मुसलमान और हमारी सेना के मुसलमान अफसर और सिपाही पाकिस्तान से क्यों नहीं जा मिलते? और हिन्दुस्तान के साथ गद्दारी क्यों नहीं करते? यह बातें इस बात का सुबूत हैं कि मुसलमान हिन्द के प्रजा राज्य के खिलाफ विश्वासघात या दुश्मनी कर रहे हैं?

19. राज्य की जड़ें मजबूत बनाने में समय लगता है। महात्मा गांधी की हत्या और उस पर सैंकड़ों जगह मिठाई बांटना, कांग्रेस के तमाम नेताओं की हत्या कर देने की साज़िश राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और हिन्दू महासभा की कार्रवाईयां इस बात का खुला हुआ सबूत हैं कि राज्य के खिलाफ बगावत और विश्वासघात का डर हिन्दुओं और सिखों से भी हो सकता है।

20. हिन्दू समाज एक होते हुए भी छोटे-बड़े अलग-अलग समुदायों से बना हुआ है प्रान्तों में लाग डाँट है। दक्षिण और उत्तरी हिन्द में बंगालियों और बिहारियों में मराठे और महाराष्ट्रीयों, तमिल, आन्ध्र और गुजराती, राजपूत, ब्राह्मण, क्षत्रिय और हिन्दुओं की बहुत सी जातियां अछूत हरिजन यह सब जातियां आपस में एक दूसरे से लाग डाँट रखती हैं और रखती रही हैं। हिन्दू धर्म में कोई भी ऐसा जादू नहीं है कि आपस में इन टूटने वालों को एक कर दिया जाये। अभी कुछ ही समय हुआ कि ज़िला बोर्डों के चुनावों में लाखों वोट जाति-पाति के आधार पर दिये गये। हमारा आगामी युग उसी हालत में चमकदार बन सकता है जब कि हम राज्य और शिक्षा के ज़रिये सब को मिला कर आगे बढ़ें और उससे एक ऐसी कौमियत बनायें जिससे साम्प्रदायिकता टकरा कर चूर-चूर हो जाये। जर्मनी, इटली, अमेरिका, इंगलिस्तान, रूस और चीन के इतिहास बता रहे हैं कि छोटे-छोटे क़बीले, प्रान्त, जात-पात, धर्म और भाषा वाले उसी हालत में राष्ट्रीयता का संगम पैदा करते हैं जब सरकार, राज्य और समाजी जीवन का निर्माण धर्म के नाम पर न किया जाये।

21. अगर हम बीस पच्चीस बरस के युग को एक इकाई मान लें तो उस युग का हज़ारों हिस्सा शायद ऐसा हो कि इसमें केवल हिन्दुओं और मुसलमानों का जीवन आपस में टकराये, आये दिन तो जीवन में जो टकराव पैदा होता है वह ऐसा है कि हिन्दू-हिन्दू के खिलाफ ही ज़्यादातर अत्याचार करते हैं। महाजन और साधारण आदमी, ज़मींदार और किसान, धनवान और निर्धन, मज़दूर और पूंजीपति कभी-कभी स्त्री-पुरुष एक जाति वाले कई विभागों के अधिकांश अफसर और उन्हीं विभागों के साधारण कर्मचारी म्युनिसिपालिटी और ज़िला बोर्ड के मेम्बर और जन साधारण लड़ाईयां तो इनमें होती ही हैं, जीवन तो उनके टकराते हैं और हमारे जीवन की सारी मुसीबतें आम तौर पर उन लड़ाइयों से पैदा होती हैं जिनमें हिन्दू, मुसलमान का सवाल उठता ही नहीं। हिन्दुओं और सिखों की उन्नति और उनके जीवन का फलना-फूलना रोकने वाले न मुसलमान हैं, न हो सकते हैं। हमारे अनुचित रीति-रिवाज़, हमारे समाज का गलत ढांचा, गलत कानून, कारोबार के गलत तरीके, व्यापार के नाम पर बेदर्दी से नफ़ा कमाने का लालच और खुद हमारे जीवन की गल्तियां, रिश्वत, चोर बाज़ार, निरक्षरता, भूख और बेकारी असली दुश्मन हैं। कभी-कभी जो हिन्दू-मुस्लिम झगड़े आपस में खड़े हो जाते हैं तो इसका यह मतलब नहीं कि हमारे जीवन को मिटाने वाले मुसलमान हैं।

**अब मुसलमान की हैसियत से सोचिये :**

1. हम मुसलमानों को इस देश में आये हुए और बसे हुए एक हज़ार बरस का युग खत्म हो गया। जब तक इस देश में हमारे अच्छे दिन थे हम मुसलमान यहां के दूसरे धर्म वालों के साथ ऐसे घुल-मिल गये थे जैसे सगे संबंधी मिल-जुल कर रहते हैं। संसार के इतिहास में कई धर्म मानने वालों के संगम के बहुत कम उदाहरण मिलते हैं। मुसलमानों ने हिन्दू समाज और हिन्दुस्तान पर इतना अच्छा प्रभाव डाला कि मुसलमानों को हिन्दुस्तान के लिए एक वरदान मांगना पड़ा। लड़ाइयां भी होती रहीं लेकिन हर टकराव के बाद हिन्दुओं और मुसलमानों की जीवन धारायें और अच्छी तरह मिल जाया करती थीं। इस तरह मिली-जुली उजली सभ्यता इस देश में बनती रही और कौमियत का एक नया भाव मुसलमानों के दिल में पलता रहा। भाषा, साहित्य, ललित कलाएं, रीत-रिवाज़, भावनायें और हर बात में हिन्दू-मुसलमान एक दूसरे पर इतना प्रभाव डाल चुके हैं। एक दूसरे से इतना ले दे चुके हैं, एक दूसरे से इतना पा चुके हैं कि इस मेल-जोल को तोड़ा नहीं जा सकता। जिस तरह से किसी फूल के रंग और खुशबू को एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। यहां का मुसलमान भी संसार का वैसा ही आदमी है जैसा यहां का हिन्दू। यहां का मुसलमान दुनिया भर की मुसलमान आबादी का एक हिस्सा ज़रूर है पर दूर क्यों जायें, बंगाल का मुसलमान जितना बंगाल के हिन्दू के करीब है उतना हिन्दुस्तान के किसी दूसरे सूबे के मुसलमान के करीब नहीं है। यही बात हिन्दुस्तान के हर एक सूबे में बसने वाले मुसलमानों की है। वह अपने सूबे में बसने वाले हिन्दुओं के जितना करीब हैं या अपने सूबे के सिखों के जितना करीब है उतना दूसरे सूबों में बसने वाले मुसलमानों के करीब नहीं। हिन्दुस्तान भर के मुसलमान इस देश के हिन्दुओं और दूसरे धर्म वालों के जितना करीब हैं उतना इस्लामी देशों के मुसलमानों के भी करीब नहीं हैं। हत्याकांड और दंगों से इस निकटता और अपनेपन को मिटाया नहीं जा सकता। यहां के मुसलमानों की सभ्यता यहां के हिन्दुओं से जितनी करीब है उतनी अरब, ईरान, मिस्र और तुर्किस्तान की सभ्यताओं के करीब नहीं है। कुरआन इतनी बड़ी किताब है और इस्लाम के पैगम्बर का इतना बड़ा व्यक्तित्व (शख्सियत) है कि इस सोते से एक संस्कृति नहीं बल्कि कितनी ही संस्कृतियां और कितनी ही क़िस्म की सभ्यतायें पैदा हुईं। अगर यहां के मुसलमानों को एक ही दिन में या धीरे-धीरे हिन्दुस्तान से बाहर किसी इस्लामी देश में भेज कर बसा दिया जाय तो उनका जीवन और उस देश के पुराने मुसलमान निवासियों के जीवन दोनों बर्बाद हो जायेंगे।

2. यह समझना या कहना इस्लाम धर्म या उसके पैगम्बर को झुठलाना है कि मानव जाति की वह बड़ी तादाद जो मुसलमान नहीं है या कलमा नहीं पढ़ती, सब के सब काफ़िर या दोज़खी हैं, काफ़िर या इस्लाम का दुश्मन उन्हें कहा गया है जो पैग़म्बरे इस्लाम के प्रचार और कोशिशों को अनुचित ढंग से रोकते या बर्बाद करते थे, जब संसार में इस्लाम फैल चुका है और दुनिया वाले मुसलमान नहीं भी हैं मुसलमानों को अनेक उचित अधिकार दिये हुए हैं या उनके साथ मिल-जुल कर रहने को तैयार हैं तो उन्हें इस नाम से पुकारना जिस नाम से पैग़म्बर या इस्लाम की कोशिशों को खराब और बर्बाद करने वालों को पुकारा गया है, इस्लाम की खिदमत नहीं है, बल्कि इस्लाम को बदनाम करना है, इस्लाम के सबसे बड़े दुश्मन कलमा पढ़ने वाले वह मुसलमान हैं जो कलमा न पढ़ने वालों या दूसरे धर्मों के मानने वालों को काफ़िर या मुसलमानों का दुश्मन समझते और बताते हैं। मुसलमानों के 13 सौ साल पुराने इतिहास में जितनी लड़ाईयां हुईं, मुसलमान राज्य जितनी बार आपस में लड़े हैं, जितनी बार एक देश के मुसलमान बाशिन्दों को दूसरे देश के मुसलमान बाशिन्दों ने गुलाम बनाया है। उतनी लड़ाईयां मुसलमान और हिन्दुओं में नहीं हुईं और न उतनी बार गैर मुसलमानों ने मुसलमानों को गुलाम बनाया है। धर्म या इतिहास, मत या राय और दुनिया की खुली हुई सच्चाई, कोई भी इसकी गवाही नहीं देता कि मुसलमानों के दुश्मन गैर मुस्लिम हैं या मुसलमानों के दुश्मन हिन्दू रहे हैं।

3. युग बदलते रहे हैं, इतिहास बदलता रहता है, मानवता (इन्सानियत) प्रगति करती जाती है। इस बात को न समझना और अपने जीवन को इस विचार के सांचे में न ढालना किसी भी कौम के लिए खुदकुशी का संदेश है। अब से कुछ सदी पहले तक दुनिया के कई देशों की यह हालत रही है कि वहां के लाखों-करोड़ों निवासियों पर थोड़े से मुसलमानों का राज रहा। उस युग के लिए ऐसा होना कोई अनुचित या बुरी बात न थी लेकिन इस बारे में कुछ और सोचने से पहले मुसलमानों के लिए यह जान लेना ज़रूरी है कि किसी देश या कौम पर वह राज कायम हो जाने के बाद, जिसे हम इस्लामी हुकूमत कहते हैं, हालत यहां तक पहुंच गयी कि मुसलमानों की ज़्यादा से ज़्यादा तादाद भूखी-नंगी और पीड़ित रही। हिन्दुस्तान में हम कहते हैं कि सैंकड़ों बरस तक इस्लामी राज्य कायम रहा लेकिन ऊंचे दर्जे के मुट्ठी भर मुसलमानों के अलावा सौ पीछे 90 मुसलमानों की हालत और ज़िन्दगी हिन्दुओं से हरगिज़ अच्छी नहीं थी। यह बात अंग्रेजों के बारे में नहीं कही जा सकती। उनकी तादाद इस देश में उंगलियों पर गिनी जा सकती थी और यह मुट्ठी भर अंग्रेज यहां के साधारण हिन्दू

और मुसलमानों से ज़्यादा सुखी और पढ़े लिखे थे लेकिन हम ध्यान से सोचें तो सौ पीछे एक अंग्रेज ही यहां अच्छी हालत में जीवन बिताते थे। दूसरे अंग्रेज अंग्रेजी फौज के सिपाही थे जिनको कुछ नहीं मिलता था और जो आम तौर पर मूड़ भी होते थे। यह और बात है कि अंग्रेज सरकार की रोटियां खा कर वह हिन्दुस्तानियों पर रौब जमाते थे पर अंग्रेजी राज में भी लाखों हिन्दू-मुसलमान गोरी फौज के सिपाहियों और सार्जेंटों के मुक़ाबले में कहीं ज़्यादा सुखी और शिक्षित थे। जब यह हाल लाख सवा लाख अंग्रेजों के राज में रहा तो इस बड़े देश की आबादी का चौथाई हिस्सा जो मुसलमान था उसे भला कौन सा जादू करके मुसलमान राजा या नवाब या ताल्लुकेदार या जागीरदार या इस्लामी हुकूमत ज्यादा मालदार या तालीमयाफ्ता बना सकती थी। आज हिन्दुस्तान में भी सैंकड़ों हज़ारों मुसलमान घराने लाखों करोड़ों हिन्दू घरानों से अच्छी हालत में हैं और रहेंगे। पाकिस्तान में सब कुछ हो जाने के बाद अभी हज़ारों हिन्दू और सिख घराने ऐसे हैं जो लाखों मुसलमान घरानों से अच्छी हालत में हैं और रहेंगे। इस्लामी हुकूमत का फ़िकरा कोई ऐसा जादू नहीं है जो मुसलमानों के जीवन को छू मन्तर से ख़ाक बना दे या उन्हें सोने से मढ़ दे या दुनिया की बुद्धि, शिक्षा और गुणों का वरदान मुसलमानों को दे दे। दुनिया के इतिहास में मज़हबी राज अपने सहधर्मियों को उभारने में कभी भी सफल नहीं हुआ।

4. आज भी आप किसी इस्लामी देश पर निगाह डालिये तो साफ़ दिखायी देगा कि वहां के साधारण मुसलमानों के मुक़ाबले में सैकड़ों गैर मुसलमान ज़्यादा अच्छी हालत में हैं। मार-काट के बाद अभी लाखों हिन्दू और सिख पाकिस्तान में बसे हुए हैं और शरयी हुकूमत इस्लामी हुकूमत के नारों के बावजूद सरकार के कायम हो जाने के बाद भी हिन्दुस्तान से गये हुए लाखों मुसलमान वहां लुट-लुटा कर फिर हिन्दुस्तान वापस आ रहे हैं।

पाकिस्तान सौ बरस तक बल्कि हज़ार बरस तक भी तरक़्क़ी करता जाये तो भी वहां कोई ऐसी इस्लामी संस्कृति फल-फूल नहीं सकेगी जिसके मुकाबले में हिन्द के मुसलमानों का कल्चर या हिन्द का इस्लाम किसी लिहाज़ से कम हो।

मानसिक (ज़ेहनी) बौद्धिक (अक़्ली) आत्मक (रुहानी) ओरे माद्दी किसी तरह की तरक़्क़ी पाकिस्तान या दुनिया के इस्लामी देशों के मुसलमान, हिन्द के मुसलमानों के मुकाबले में न कर सकेंगे क्योंकि हिन्द की सरकार किसी धर्म

या संस्कृति को दबाने, कमज़ोर करने या मिटाने के लिए या राज से उनका जायज़ हिस्सा छीनने के लिए कायम नहीं हुई है। जिस दिन ऐसा होगा हिन्द सरकार मिट जायेगी। यह वह युग है कि हिन्दू राज हिन्दुओं के लिये ही मौत का संदेश बन जाये और इस्लामी हुकूमत मुसलमानों को ही मिटा डाले। सिर्फ प्रजा राज्य और सौ फ़ीसदी प्रजा राज्य के कायम होने से ही हिन्दू, मुसलमान और सिख सब का भला है। मिले-जुले प्रजा राज्य से सबको सिर्फ धन दौलत का ही लाभ नहीं है बल्कि सबकी संस्कृति और सभ्यता, कला और साहित्य या धर्म को भी फ़ायदा है।

5. साम्प्रदायिकता का भाव खुद अपने संप्रदाय के लिए खुदकुशी के बराबर होता है। देखने में फ़िरकापरस्त आदमी दूसरे धर्म वालों को छुरा भोंकता है लेकिन दरअसल वह आदमी अपने ही फ़िरके का खून करता है चाहे दूसरे फ़िरके वालों से बदला लेने ही के लिए वह ऐसा काम करे। हिन्दुओं और सिखों के साथ इस देश के अलग-अलग सूबों में बहुत से मुसलमानों ने जो कुछ भी किया, चाहे बदला लेने के लिए ही किया हो या 'इस्लाम ज़िन्दाबाद' का नारा लगा कर किया, उससे इस्लाम के ख़लीफों और इमामों, इस्लाम की पवित्र और उजली आत्माओं को खुशी हुई होगी? साम्प्रदायिकता इन्सान को गन्दा बना देती है। अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी इस्लामी संस्कृति का सोता समझी जाती थी। वहां के विद्यार्थियों ने मौलाना अबुलकलाम आज़ाद या अब्दुल मजीद ख़्वाजा के साथ जो भद्दा और गन्दा सुलूक किया उससे मुसलमानों को और इस्लाम को कोई भी फायदा पहुंचा? क्या ऐसी हरकतें किये बगैर कोई पाकिस्तान कायम नहीं हो सकता था?

6. हिन्दुस्तान के मुसलमानों का यह चाहना कि इस देश के कुछ हिस्सों में जहां मुसलमान ज्यादा तादाद में हैं, एक आज़ाद हुकूमत कायम हो जाये ठीक हो या गलत, लेकिन ऐसा आज़ाद पाकिस्तान जिसके क़ायम होने से मुसलमानों को कम खुशी हो और अमेरिका व इंगलिस्तान को ज़्यादा खुशी हो, मुसलमानों के लिए कहां तक फ़ायदा पहुंचाने वाला साबित होगा। यह सोचने की बात है कि जो कुछ भी हुआ अब पाकिस्तान बन चुका है और उसकी सरहदें तय हो चुकी हैं। जो पाकिस्तान को संकट में फंसा हुआ देखना या पाकिस्तान की सरकार को कमज़ोर बनाना चाहे लेकिन वह मुसलमान भी इस्लाम, पाकिस्तान और मुसलमानों का दुश्मन है जो पाकिस्तान में बसे हुए हिन्दुओं और सिखों और गैर मुसलमानों के लिए स्वर्ग

बनाने में मदद न दे। अगर पाकिस्तान में हिन्दू, सिख या जो दूसरी गैर मुस्लिम जातियां बस रही हैं और अब तक बसी हुई हैं उन्हें पाकिस्तान से भागना पड़े या पाकिस्तान में रह कर कष्ट और अपमान का जीवन बिताना पड़े या पाकिस्तान के मुसलमानों से उन्हें कम अधिकार दिये गये यानि अगर उन्हें उनकी तादाद के मुताबिक हर एक सरकारी महकमें में और ज़िन्दगी के हर एक मैदान में जगह न दी गयी, उन्हें अगर यह न महसूस कराया गया कि पाकिस्तान और पाकिस्तान की सरकार के लिए भयानक साबित होगी। इसकी बिल्कुल ज़रूरत न पड़ेगी कि पाकिस्तान में हिन्दुओं और सिखों के साथ अत्याचार और अन्याय का बदला इस तरह लिया जाये कि हिन्दुस्तान-पाकिस्तान पर हमला कर दे। पहली बात तो यह है कि ज़्यादा गिनती वाली कम गिनती वाली जाति को न मिटा कर खुश हो सकती है न अपने आप को ताकतवर बना सकती है। आज तक लूट मार कर के कोई जाति तरक़्क़ी नहीं कर सकी। पाकिस्तान में निर्धनों, किसानों, मज़दूरों और कारीगरों व मामूली हैसियत के लोगों की तादाद सौ पीछे 99 की है और इसमें हिन्दू-मुसलमान की कोई कैद नहीं है। अगर उन निर्धनों में ग़ैर मुसलमानों को अलग करके लूट लिया गया और उनकी खेती बाड़ी और उनका कारोबार मुसलमानों में बांट दिया गया तो मुसलमानों की हैसियत में कोई खास तरक़्क़ी नहीं होगी। ज़्यादा से ज़्यादा यही होगा कि जिन निर्धन मुसलमानों की हैसियत 200 रुपये साल की है वह इस लूटमार से मुमकिन है 290 रुपये साल की हो जाये पर जो राष्ट्र या राज्य धर्म के आधार पर किसी कारण से कमज़ोर लोगों को सताता या मिटाता है उस के अन्दर चोरी, बेइमानी और असभ्यता का घुन लग जाता है। और फिर उस राज्य के लिए तरक़्क़ी करना नामुमकिन हो जाता है। पाकिस्तान के सौ पीछे 20-25 हिन्दू अगर बुरी दशा और तबाही की हालत में वहां रखे गये तो पाकिस्तान की सबसे बड़ी दौलत यानी वहां की आबादी की शक्ति लुट जायेगी या कम हो जायेगी। किसी राष्ट्र और राज्य के लिये यह बात बड़ी भयानक है कि उस राष्ट्र के साथ या उस राज के मातेहत रहने वाले लाखों करोड़ों आदमी सिर्फ दूसरा धर्म रखने के कारण मूढ़, अनपढ़, गरीब और बुरी हालत में रखें जायें। किसी राज्य में इन्सान की तरक़्क़ी का बंटवारा नहीं हो सकता। प्रजा के एक अंग का कमजोर होना सारी आबादी की निर्बलता है। दूसरों को गिरा कर अपनी तरक़्क़ी नहीं हुआ करती। इसी तरह बेइन्साफी का भी बंटवारा नामुमकिन है। पाकिस्तान के असर और इख्तेयार वाले लोग अगर हिन्दुओं और सिखों के साथ अन्याय का व्यापार शुरू करेंगे तो आखिर में मुसलमानों के साथ यह लोग भी वैसा ही अन्याय का व्यवहार करेंगे।

7. हम देख चुके हैं कि हिन्द में पीतल, रेशम, मुरादाबादी बरतनों का काम और कई दूसरे काम करने वालों को मिटाने से किस तरह हिन्दुओं को ही नुकसान पहुंचेगा। अब देखिये कि पाकिस्तान में हिन्दुओं को मिटा देने से किस प्रकार मुसलमानों को नुक़सान पहुंचा और पहुंचेगा। इन्हीं दिनों जो दंगे हुए थे उनमें लाहौर में अनाज की मंडी रखने वाले बहुत से हिन्दुओं को मार डाला गया और उनकी मंडियां लुट गयीं। इन मंडियों में अनाज लाने और यहां से अनाज ले जाने वाले सैंकड़ों हज़ारों मुसलमान मज़दूर थे वह सब बेकार हो गये और भूखों मरने लगे। लाहौर में मुसलमान यात्रियों को भी भूखों मरना पड़ा क्योंकि उनका ज़्यादातर काम हिन्दुओं और सिखों से चलता था। कपड़े की दुकानें ज़्यादातर हिन्दुओं की थीं वह लुट गयीं और इस तरह लाहौर में दर्ज़ियों के हज़ारों घराने फ़ाक़े करने लगे। पश्चिम पंजाब से जब हिन्दू सिख भागे तो वहां उर्दू किताबों, रिसालों का बिकना सौ पीछे 80 बंद हो गया क्योंकि मुसलमानों से कहीं ज़्यादा उन उर्दू किताबों और रिसालों के खरीदने वाले हिन्दू और सिख थे। पूर्वी पंजाब और दिल्ली जहां यह लोग भाग आये वहां हिन्दुओं और सिखों ने उर्दू छापेखाने क़ायम किये और उर्दू पुस्तकें और पत्रिकाएं निकालीं। क्या मिला मुसलमानों को? सिवाय इसके कि पुस्तकों और पत्रिकाओं और छापेखाने का कारोबार करने वाले हज़ारों मुसलमान घाटे में रहे। ढाके की मलमल दुनिया भर में मशहूर है पर ढाके के जुलाहे ज़्यादातर हिन्दू हैं। उन्हें मार डालिये या मार भगाइये पूर्वी पाकिस्तान में, करोड़ों रुपए साल का घाटा हो जायेगा। हज़ारों हिन्दू दुकानों और कारखानों में मुसलमानों का हिस्सा था और मुसलमानों की दुकानों और कारखानों में हिन्दुओं और सिखों का फ़ायदा था। हिन्दुओं और सिखों ने कई मुसलमान दुकानों को यह समझकर जला दिया कि यह मुसलमानों के हैं लेकिन बर्बादी हुई मुसलमानों के साथ-साथ हिन्दू और सिख हिस्सादारों की। मुसलमानों ने कई दुकानों को यह समझ कर जला दिया कि हिन्दू और सिखों को नुकसान पहुंचे पर उन दुकानों के मुसलमान हिस्सेदार भी बर्बाद हो गये। लूट-मार की आंधी से जो बर्बादियां होती हैं वह एक धर्म वालों तक सीमित नहीं रखी जा सकतीं चाहे यह हिन्दुस्तान में हो या पाकिस्तान में। फिर लूट मार से जिन कमीने लोगों को कुछ धन मिल जाता है वह बहुत जल्द खत्म हो जाता है। क़ौमों का लुटेरा थोड़े से धन को बड़ा धन बनाना नहीं जानता वह उसे बहुत जल्द खा-पी कर बराबर कर देता है। इस तरह एक जराएम-पेशा समाज के अन्दर पैदा हो जाता है जो अपने सहधर्मियों के लिए भी भयानक साबित होता है। पाकिस्तान में जिन मुसलमान लुटेरों ने पहले हिन्दुओं और सिखों को लूटा था उन्होंने बाद में मुसलमानों को ही लूटना शुरू कर दिया।

8. जब देश में मुसलमानों का राज्य था उस समय धन सम्पत्ति, जागीर, मनसब और ज़्यादातर छोटी-बड़ी नौकरियां मुसलमानों के हाथों में थीं लेकिन फिर भी जैसा हम पहले बता चुके हैं एक सौ मुसलमानों में इक्का-दुक्का को छोड़ कर बाक़ी सब मुसलमानों की हालत उतनी ही अच्छी या उतनी ही बुरी थी जो साधारण हिन्दुओं की थी। साधारण मुसलमानों की किस्मत में इस्लामी हुकूमत के ज़माने में थी सूखी रोटी आधा पेट खाना और गन्दगी के अलावा और कुछ न था। अब हिन्दू में अगरचे हिन्दुओं को उनकी तादाद के अनुसार नौकरियां और ओहदे मिले तो इस में न कोई अन्याय है न मुसलमानों के साथ कोई ज़्यादती लेकिन अब वह युग नहीं रहा कि खुशहाली तन्दुरुस्ती, तालीम या तरक़्क़ी के लिये ज़िन्दगी में पनपने और लहलहाने के मौक़े सिर्फ़ उन मुट्ठी भर आदमियों को मिलें जो सरकारी अफ़सर हैं या जो बड़े-बड़े कारोबार करते हैं। यह युग किसानों, मज़दूरों, कारीगरों और साधारण आदमियों के उभरने और आगे बढ़ने का है। फिर हमें यह भी नहीं भूलना चाहिये कि इस्लामी राज्य में अगर अच्छी नौकरियां एक हज़ार थीं तो अब अच्छी नौकरियां 40 और 50 हजार की तादाद तक पहुंचेंगी। इसलिए अगर इस्लामी राज में अगर एक हजार बड़े-बड़े अफसर थे तो अब चार-पांच हजार मुसलमान बड़े-बड़े अफसर होंगे और 40-45 हज़ार हिन्दू बड़े या अच्छे पदों पर होंगे। व्यापार और नौकरियों की तादाद अब बहुत बढ़ गयी है और बढ़ती जायेगी और मुसलमानों के हर जीवन की कमी पूरी हो जायेगी। वह युग अब आ चुका है जब सरकारी नौकरियां और ख़िताब शोभा बढ़ाने और धन इकट्ठा करने के लिये ज़रूरी न समझे जायें। हर हिन्दू-मुसलमान अपनी लियाक़त के अनुसार तरक़्क़ी कर सकेगा। आज से 50 बरस बाद का हिन्दुस्तान ऐसा देश होगा जिसमें बड़ी-बड़ी नौकरियों से ले कर मुसलमान मज़दूर और मुसलमान किसान तक ऐसी खुशहाल और तरक़्क़ीयाफ्ता ज़िन्दगी बिताते हुए दिखाई देंगे जैसा जीवन इस्लाम के सुनहरे युग में भी मुसलमानों ने न बिताया था। और यही हाल हिन्दुओं का भी होगा। स्वार्थ का टकराव होने ही न पायेगा। एक का अधिकार छीन कर दूसरे को देने का समय नहीं रहा। हमें सम्पत्ति सुख और धन की पैदावार और बंटवारे का निराश करने वाला ख़्याल नहीं करना चाहिए। यह चीज़ें उगती हुई, बढ़ती हुई और चलती-फिरती चीज़ें हैं। धन कोई रोड़ा-पत्थर नहीं न कोई मुर्दा और सीमित चीज़ है जो मुसलमानों से छीन कर हिन्दुओं को दे दिया जाये या हिन्दुओं से छीन कर मुसलमानों को दे दिया जाये। वह दिन गये कि सौ पीछे 99 इन्सान सौ पीछे एक उन आदमियों को खुदा समझते थे जो राजा, सेनापति, मंत्री, जागीरदार, महाजन या बड़े-बड़े ओहदेदार होते थे। अब हर

घर में वह सुख और खुशहाली भर जायेगी जिसे पुराने और आज कल के रईस, महाजन और बड़े-बड़े अधिकारी लालच भरी निगाहों से देखेंगे। ज़मींदारी, ताल्लुकेदारी हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों जगहों से मिटाई जा रही है। महाजनों और पूंजीपतियों की मनमानी, नफ़ाखोरी को रोका जा रहा है। बड़े-बड़े कारोबार सरकार के हाथ में आ जाने वाले हैं। आज न सही दस बरस बाद सही ऐसी हालत में हिन्दू-मुसलमान का सवाल ही कहां रह जाता है। दोनों ही के खुशहाल रहने और अपनी-अपनी संस्कृति की तरक़्क़ी करने का मौक़ा ग़ैर फ़िरक़ावाराना और गैर मज़हबी प्रजाराज में हासिल होगा।

जिस तरह हिन्दुओं और सिखों के निर्धन हो जाने से मुसलमान धनी नहीं बन सकते न मुसलमानों को निर्धन बना देने से हिन्दू और सिख धनी हो सकते हैं, उसी तरह हिन्दुओं की संस्कृति नष्ट हो जाये या बेजान हो कर रह जाये या यूरोप और अमेरिका की ग़ैर मुस्लिमों की संस्कृति मिट जाये या चीन और जापान की संस्कृति नष्ट हो जाये तो मुस्लिम संस्कृति हरगिज़ जीती न रहेगी। इसी प्रकार यदि हिन्दुस्तान, पाकिस्तान या दुनिया भर के मुसलमान गैर मुहज़्ज़ब हो जायें, नुकसान पहुंचेगा, यह सोचना गलत है कि हिन्दू धर्म और संस्कृति या दूसरे स्थानों के गैर मुस्लिम धर्म और संस्कृति के कमज़ोर पड़ने से सारी दुनिया मुसलमान हो जायेगी या इस्लाम के प्रचार का मौक़ा हाथ आयेगा। ग़ैर मुस्लिम संस्कृतियों की दुर्बलता इस्लाम को मिटा देगी। संसार की सौ पीछे अस्सी-पच्चासी आबादी गैर मुस्लिम तमद्दुमीहुनी तरक़्क़ी से जो नैतिक और बौद्धिक उन्नति करती है अगर उसका यह फैलाव रुक जाये तो संसार के सौ पीछे 15 मुसलमानों के संभाले, इन्सानियत का यह गिरता हुआ घर संभल न सकेगा। बात यह है कि वह युग आ चुका है जबकि संसार की संस्कृति और संसार की सभ्यता सांप्रदायिकता और किसी ख़ास धर्म के लिये मौत की खबर न होगी बल्कि ज़िन्दगी का पैग़ाम होगी। यह सच है कि लोग युगों तक अपने आप को हिन्दू, मुसलमान, बौद्ध, ईसाई, पारसी, सिख, आस्तिक, नास्तिक और दूसरे धर्मों से पुकारते रहेंगे पर ढलते जायेंगे इसी तहज़ीब के सांचे में। इस्लाम और दुनिया के बड़े-बड़े धर्म जो संदेश लेकर आये थे वह किसी न किसी रूप में बहुत हद तक पूरे हो चुके हैं। इस्लाम के पैगम्बर के संदेश और कोशिशों के ख़िलाफ जो शक्तियां लड़ती थीं अब वह मिट चुकी हैं। लोग बिना कलमा पढ़े हुए या बिना शरीयत के मुताबिक चले हुए या इस्लाम का बाहरी जामा पहने हुए उस शराफ़त और तहज़ीब के नुकतए-नज़र को मान चुके हैं जिस के लिए इस्लाम

ने जन्म लिया था। इस्लाम हिन्दू धर्म या ईसाईयत या नास्तिकता के ख़िलाफ जेहाद नहीं था बल्कि ग़ैर मुहज़्ज़ब जिन्दगी की मुख़ालफ़त था। इस्लाम ने यह कभी नहीं कहा कि कलमा पढ़ने वाले मुसलमानों के अलावा दुनिया की सब जातियां खराब या असभ्य हैं और वह इस्लाम को समझने में असमर्थ रहेंगी। यह बात मुसलमानों में वह लोग नहीं समझते जिनकी निगाह तंग है। उन्हें तो इसकी पड़ी है कि दुनिया की ढाई अरब आबादी चाहे जैसा जीवन बिताये लेकिन कहे अपने आपको मुसलमान, इस्लाम संसार में इसलिए हरगिज़ नहीं आया था कि संसार के सौ फीसदी इन्सानों से या दुनिया के ज़्यादा से ज़्यादा इन्सानों से यह कहलाये कि हम कलमा पढ़ने वाले मुसलमान हैं। इस्लाम आया था इसलिये कि दुनिया के सौ फ़ीसदी इन्सान यह कहें कि हम भले और नेक हैं और हमें जाति, धर्म और देश का फ़र्क सोचे बगैर इन्सान से प्रेम है।

*हम मोअहिहद हैं हमारा केश है तरके रसूम*
*मिल्लतें जब मिट गयीं अज़्जाए ईमां हो गयीं*

*—ग़ालिब*

और इन जातियों के मिटने पर यह हरगिज़ ज़रूरी नहीं है कि जो एक मानव समाज संसार में बन जाये, वह इस्लामी जाति ही कहलाये या हिन्दू जाति कहलाये। ग़ालिब के शेर में ईमान जो शब्द आया है उसका मतलब यह नहीं है कि ईमान वही चीज़ है जिसे मुसलमान ईमान समझे हैं और इसलिए ग़ैर मुस्लिम समझ ही नहीं सकते। जिस सभ्यता की नींव इस्लाम ने डाली है या हिन्दू धर्म ने डाली है या दुनिया के किसी धर्म ने डाली है इसमें इस तहज़ीबयाफ्ता इन्सान के लिए कलमा पढ़ने की कोई क़ैद नहीं। जब यहां अंग्रेजी राज्य था तो यहां की खेती-बाड़ी, कारीगरी और मशीन कारखाने अधमरी हालत में जी रहे थे, हमारे जीवन के आधार मिट रहे थे, हमारी नसों में तन्दुरुस्त खून का संचार नहीं था, हमारे जीवन की चमक और गरमी गायब हो चुकी थी। ये डेढ़ सौ साल का ज़माना वह था जिसमें संसार भर के आज़ाद देश कहां से कहां पहुंच गये। हमारा ध्यान बड़ी-बड़ी बातों की ओर जाता ही नहीं था। राष्ट्र और देश के बारे में ठीक तरह से सोच विचार करना इक्का-दुक्का लोगों को छोड़ कर हमारी जाति के लिए यहां तक कि पढ़े-लिखे के लिए भी कठिन हो गया था। आम तौर पर हमारे विचार छोटी-छोटी बातों की ओर जाते थे। गाये और बाजा, मुहर्रम और दशहरा, ईद और होली। कुछ छोटी-बड़ी नौकरियों में सौ पीछे

कितने हिन्दू हैं और सौ पीछे कितने मुसलमान? हिन्दी उर्दू के झगड़े और बेकार धार्मिक वाद जिनसे तू-तू मैं-मैं के अलावा और कुछ न होता था। इन्हीं छोटी-छोटी बातों में हम इस तरह उलझ कर रह गये थे जैसे मकड़ी के जाले में मक्खी उलझ कर रह जाती है। इन्हीं बातों के लिए हम आपस में झगड़े करते थे, खून खराबा करते थे और लूट मार करते थे। अगर कहीं इन सड़ी गली बातों में अंग्रेजी सरकार ने हिन्दू का साथ दिया तो हम उसे हिन्दू जाति और हिन्दू संस्कृति या हिन्दू धर्म की जीत समझते थे। अगर मुसलमानों का साथ दे दिया तो उसे मुसलमानों और इस्लाम व इस्लामी तहज़ीब की जीत समझते थे। हम न यह सोचते थे और न यह सोच पाते थे कि इन दिनों में जीतना किसी को कोई फ़ायदा नहीं पहुंचाता। करोड़ों हिन्दू और करोड़ों मुसलमान भूखे, अनपढ़ और दुखी थे और इन बातों में हिन्दू या मुसलमानों की जीत, जेहालत, अज्ञान, निर्धनता, बेकारी, रोग और जीवन की अनेक कठिनाइयां दूर नहीं कर सकती थी। देश तड़प-तड़प कर मर रहा था, अंग्रेजी राज की सबसे भयानक बात यही थी कि हम अपने असली वतन को न पहचानें और गलतफ़हमी फैलाने वाली बातों में अपनी भलाई का ख्वाब देखें। आज हम हिन्दू मुसलमान आज़ाद हो कर भी अगर गुलामी के खयाल और भाव रखेंगे तो हमारी आज़ादी हमें ले डूबेगी। राष्ट्र गलत विचारों और भार के कारण मिटते हैं, दूसरी जातियों के हाथों नहीं। सच्चाई की रोशनी में अगर हम सोचें तो यह बात साफ़ हो जायेगी कि यह सवाल उठता ही नहीं कि इस देश में हिन्दू बड़ा या मुसलमान बड़ा, हिन्दू राज्य है या इस्लामी राज्य है। हिन्दुओं की जीत हुई या मुसलमानों की जीत हुई। सारे समाज में छोटे बड़े हज़ारों काम हैं, हज़ारों ओहदे हैं। सवाल हिन्दू-मुसलमान का नहीं, सवाल तो यह है कि हर हिन्दू को, हर मुसलमान को सारे समाज की ओर से और राज्य की ओर से खाने, पीने, पढ़ने-लिखने और जवान होकर अपनी हैसियत और लियाक़त के अनुसार पेशा अख्तियार करने, नौकरी और ओहदा पाने का अच्छे से अच्छा इन्तेज़ाम है या नहीं। जैसे प्रकृति या कुदरत संसार भर में जितने पुरुष पैदा करती है क़रीब-क़रीब उतनी ही स्त्रियां भी पैदा करती है और आदमी व औरतों में इस बात की लाग डांट नहीं होती कि संसार में ज़्यादा तादाद में मर्द हैं या औरतें। इसी तरह प्रजा राज्य में समझदार और प्रगतिशील समाज में यह सवाल पैदा न होगा कि बड़ी-बड़ी नौकरियां ज़्यादातर हिन्दू पाये या मुसलमान। बडे-बड़े व्यापार, अधिकार और बड़ी-बड़ी जगहें हिन्दुओं को मिले या मुसलमानों को। तहज़ीबयाफ्ता हिन्द में इस बात का इन्तेज़ाम होगा कि मुसलमानों और हिन्दुओं को बचपन में अच्छी से अच्छी तालीम दी जाये और यह तालीम अगली हो जिसका सम्बन्ध उद्योग

धंधों से होता है। हर बच्चे में काम करने की लियाकत पैदा हो, इस शिक्षा में धर्म और सांप्रदायिकता के लिए कोई स्थान न हो बल्कि शिक्षा उसी भावना से दी जाये जैसा कि साइंस और कला की शिक्षा दी जाती है। जो ऊंची शयेरी की भावना होती है या जो उद्योग धंधों में भावना पाई जाती है। यह भावना धर्म और सांप्रदायिकता से कोसों दूर है। इस तरह अच्छी तरह लिख-पढ़ कर ही हर हिन्दू और मुसलमान बच्चा जब जवान हो तो अपनी लियाक़त के मुताबिक बड़ी से बड़ी जगह भी पाये और मामूली से मामूली जगह पा कर भी उससे ज़्यादा से ज़्यादा फायदा उठाये। अगर इसी बात पर मुसलमान बच्चों को तालीम पाने के पूरे मौके मिले और उनमें से बड़े ज़िम्मेदारी के ओहदों के लायक अगर दो हज़ार मुसलमान बच्चे तैयार हो जायें तो यह दो हजार मुसलमान बड़े पद पायेंगे। अगर दस लाख हिन्दू बच्चों को वही मौका मिले और मान लिया जाए कि उनमें से दो हज़ार से कम बच्चे बड़े पदों के काबिल निकले तो हिन्दुओं के ज़्यादा गिनती में होते हुए भी मुसलमानों के मुक़ाबले में उन्हें नौकरियां कम गिनती में मिलेंगी पर दिन-रात बड़े-बड़े पदों और बड़ी-बड़ी नौकरियों के लिए ललचाना या कारोबार की चान्दाली से जो फ़ायदे होते हैं और वो अब न हो पायेंगे। इनके लिए ललचाना अपनी कौम के लिए भलाई चाहना नहीं है। सौ पीछे 99 हिन्दू-मुसलमान बच्चे इस लिए पैदा नहीं होते कि वह बड़े-बड़े पदों पर रहें या बड़े-बड़े महाजन बन जायें, किसानी, मजदूरी अच्छी और मामूली नौकरियां ऐसे काम हैं जिनमें सौ पीछे 99 हिन्दु-मुसलमान चमकेंगे और ज़िन्दगी की बरकतों से मालामाल होंगे। जहां तक बड़ी-बड़ी नौकरियों का सवाल है इसका सच्चा 'शरीफाना' और हिन्दु-मुसलमान दोनों को एक सा फ़ायदा पहुंचाने वाला हल यही है कि कोई हिन्दू या कोई मुसलमान अगर सचमुच किसी बड़े पद के काबिल है तो उसे इस पद से धर्म के कारण महरूम न रखा जाये। तालीम और इम्तेहान या नौकरियां देने के दूसरे दंगों में यह बात न आने पाए कि उसमें से किसी एक धर्म वाले को दूसरे धर्म के मानने वाले के मुक़ाबले में ज़्यादा आसानी से और फ़ायदा हो। ऐसा न होने पाए कि कोई बड़ा अधिकारी होने की लियाक़त रखता था पर सरकार के किसी हथकंडे से इससे कम लायक आदमी को वह जगह दे दी गयी। जात-पात और धर्म की बिना, इस तरह किसी एक धर्म वालों की ज़्यादा गिनती होने के कारण दूसरे धर्म के कम गिनती के लोगों को बड़ी या छोटी नौकरी पाने से वंचित न रखा जाए। तरक़्क़ी पाये हुए हिन्द में बड़े-बड़े पदों पर जितने मुसलमान होंगे उतने मुसलमान न ख़लीफों के समय में बड़े-बड़े पदों पर थे और न औरंगजेब के समय में, न बड़ी से बड़ी इस्लामी हुकूमत के समय में और इतने हिन्दू भी बड़े पदों

पर होंगे जितने राम राज्य में भी नहीं थे। इसी तरह ईसाई, पारसी और सिख भी ज़्यादा से ज़्यादा तादाद में बड़े-बड़े पदों पर होंगे। अगर हमने प्रजा राज्य के सिद्धान्त को इस देश में ज़िन्दा रखा तो ज़्यादा गिनती वाले कम गिनती वालों को कभी दबा न सकें और न कम गिनती वाले ग़लत और नाजायज़ और झूठे फ़ायदों का सपना देखें।

पर बड़ी-बड़ी नौकरियों और पदों के लिए हर धर्म वालों को पूरा-पूरा मौका और पूरी-पूरी सहायता देने के बाद असली सवाल सौ पीछे 99 हिन्दू-मुसलमानों का रह जाता है यह सवाल सब से ज़्यादा अहम है। यह हो ही नहीं सकता कि हिन्दुओं की गिनती ज़्यादा होने के कारण उनका ज़्यादातर हिस्सा छोटी नौकरियों में खप जाए और मुसलमान अपनी आबादी के मुताबिक छोटी-छोटी नौकरियां न पायें और न यह हो सकता है कि नौकरियों में तरक्की करने के मौके मुसलमानों को हिन्दुओं से कम मिले या इस सम्बन्ध में न्याय के पर्दे में पक्षपात किया जाए। अगर तनख्वाह बढ़ेगी तो सब की बढ़ेगी, टैक्स सब से एक सा वसूल किया जाएगा, काम और छुट्टियां सब को बराबर मिलेंगी। इसी तरह मज़दूर और किसानों, कारीगरों और साधारण काम करने वालों में यह नहीं हो सकता कि हिन्दू ज़्यादा फ़ायदे में रहें और मुसलमान कम फ़ायदे में रहें। हर पेशे वाले चाहे वह हिन्दू हों या मुसलमान, छोटी जाति वाले हों या बड़ी जाति वाले, ईसाई हों, सिख हों या पारसी हों या कोई हों, अपनी ट्रेड यूनियन बनायेंगे, अपने पेशे की सभाएं और पंचायत बनायेंगे और मिलजुल कर उभरेंगे और दिन दूनी रात चौगुनी तरक़्क़ी करते जायेंगे। जिस सरकार की बुनियाद और समाज के विचारों की नींव सांप्रदायिकता पर होगी वह राज्य और समाज उतनी तरक्की कर ही नहीं सकता जिसका चित्र खींचा गया है। यह मुमकिन नहीं है कि हिन्दुस्तान में अगर हम सौ पीछे 90 आबादी को उभारें तो सौ पीछे दस मुसलमान आबादी को बस्ती में छोड़ दें या पाकिस्तान में सौ पीछे 75 या 80 मुसलमान आबादी के जीवन को ढंग से सुखी और खुशहाल बनाया जाए तो वहां की गैर मुस्लिम आबादी को निर्धनता और अपमान का जीवन बिताने के लिए छोड़ दिया जाए।

प्रजा की तरक़्क़ी का बंटवारा नहीं हो सकता। झूठी चमक दमक के नाम पर मुस्लिम तरक़्क़ी और हिन्दू उन्नति का समय खत्म हो गया पर साम्प्रदायिकता किस लिए? हिन्दू राज्य और मुस्लिम राज्य के नारे किस लिए?

यह बातें ख़याली हैं और हमें ज़िन्दगी की आंखों में आंखें डाल कर आगे

बढ़ने से रोकती हैं। साम्प्रदायिक हिन्दू, हिन्दू जाति के लिए खतरनाक है, मुसलमान के लिए उतना खतरनाक नहीं है। फ़िरक़ापरस्त मुसलमान फ़िरक़े के लिए ज़्यादा नुक़सान पहुंचाने वाला है, हिन्दू के लिए उतना नहीं और यही हाल सांप्रदायिक सिख, सांप्रदायिक पारसी, सांप्रदायिक एंग्लो इंडियन, सांप्रदायिक इसाई का है। ये सब अपनी जाति के दुश्मन हैं। सांप्रदायिकता के आधार पर अपने सहधर्मियों की सेवा ही नहीं की जा सकती पर सांप्रदायिकता से बच कर ही अपने संप्रदाय की, अपने सहधर्मियों की तरक़्क़ी हो सकती है। या यों कहो कि दूसरे संप्रदाय वालों, दूसरे धर्म वालों की उन्नति, खुशहाली नामुमकिन है।

संसार इतना विशाल है कि वह एक धर्म के संभाले संभल नहीं सकता। अगर हम यह मान भी लें कि हिन्दू संस्कृति, मुस्लिम संस्कृति, बौद्ध संस्कृति बड़ी-बड़ी संस्कृतियां होते हुए भी एक दूसरे से कुछ अलग हैं तो भी संसार को इस अलगाव की आवश्यकता है। जो इस्लाम गैर इस्लामी संस्कृतियों से प्रभावित (मुतास्सिर) नहीं हुआ वह इस इस्लाम से कम मालामाल रहेगा। जो गैर इस्लामी संस्कृतियों से भी प्रभावित हुआ है वह हिन्दू संस्कृति, जो दुनिया भर की गैर हिन्दू संस्कृतियों से प्रभावित नहीं हुई उस हिन्दू संस्कृति के मुकाबले कम ऊंची रहेगी। जो इस्लाम और यूरोप व दुनिया की दूसरी पुरानी और नयी संस्कृतियों से प्रभावित होती है।

आज की हिन्दू संस्कृति का स्वभाव उसका रस और जस समझ में आ ही नहीं सकता।

अगर हम इस बात को परख न सकें कि मौजूदा हिन्दू संस्कृति किस हद तक इस्लामी संस्कृति और यूरोप की दूसरी मौजूदा संस्कृतियों से प्रभावित हुई है। रवीन्द्रनाथ टैगोर, महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानन्द, पंडित जवाहर लाल नेहरू और सैंकड़ों, चोटी के हिन्दू इतनी बड़ी विभूतियां हो ही नहीं सकते थे अगर वह इस हिन्दू संस्कृति से फायदा न उठाते जिसमें गैर हिन्दू संस्कृति भी मिल चुकी है। इसी तरह डॉक्टर 'मुहम्मद इक़बाल' और बहुत से ऊंचे विचार रखने वाले मुसलमान इतने बड़े या महान न होते अगर उनका इस्लाम वह इस्लाम होता जिस पर गैर मुस्लिम संस्कृति का गहरा असर नहीं पड़ा है। हज़ारों तत्व मिल कर और मिट कर कीमया की हैसियत हासिल करते हैं और यही हाल संस्कृति की कीमया का भी है।

अगर हमने हिन्दुस्तान व पाकिस्तान में सांप्रदायिकता की तंग और बर्बादी की तरफ ले जाने वाली चारदीवारी से आज़ाद होकर गैर मज़हबी और गैर फ़िरक़ावाराना आज़ाद प्रजा राज्य और तरक़्क़ी पाये हुए प्रजा राज्य को पनपने का मौका दिया तो अब से कुछ दिन बाद इस देश में हिन्दू धर्म और हिन्दू समाज, इस्लाम और मुस्लिम समाज हर धर्म और हर संस्कृति उतना उजला स्वरूप धारण करेगी कि हर संस्कृति वालों के ज्ञान और कलायें, भाषा और साहित्य, फलसफ़ा और साइंस इस जगमगाते हुए रूप में दिखाई देंगे जिसका सांप्रदायिक और मज़हब परस्त लोग सपना भी नहीं देख सकते। हिन्दू संस्कृति को हिन्दू राज्य मिटा कर रख देगा, मुस्लिम संस्कृति को इस्लामी राज्य मिटा कर रख देगा और सांप्रदायिक राज्य अपने ही सहधर्मियों को ले डूबेगा।

***isd इंस्टीट्यूट फॉर सोशल डेमोक्रेसी***

फ्लैट नम्बर-110, नम्बरदार हाउस,

62-ए, लक्ष्मी मार्केट, मुनिरका

नई दिल्ली-110067

टेलीफोन 011-26196356, टेलीफैक्स 011-26177904

ईमेल : notowar@rediffmail.com

केवल सीमित वितरण के लिए